"ज्ञान, विज्ञान आणि सुसंस्कार यांसाठी शिक्षणप्रसार"

- शिक्षणमहर्षी डॉ. बापूजी साळुंखे

श्री स्वामी विवेकानंद शिक्षण संस्था संचालित

विवेकानंद कॉलेज, कोल्हापुर (अधिकारप्रदत्त स्वायत्त संस्था)

हिंदी विभाग

शैक्षिक वर्ष 2024 - 25

दि. 23/01/2025

नोटिस

वरीष्ठ महाविद्यालय के हिंदी विभाग के बी. ए. भाग एक, दो, तीन और बी. कॉम. भाग एक के सभी छात्रों को सूचित किया जाता है कि शैक्षिक वर्ष 2024-25 का पहले सत्र का अंतर्गत मूल्यमापन (होम असाइमेंट/ टेस्ट/ सेमिनार /प्रोजेक्ट) दि. 10/02/2025 तक कमरा क्रमांक – 308, हिंदी विभाग में जमा करें।

VIVEKANAND COLLEGE KOLHAPUR (Empowered Autonomous) ESTD JUNE 1964

डॉ. आरिफ महात

विभाग प्रमुख
हिंदी विभाग,
विवेकानंद कॉलेज कोल्हापूर.
(अधिकारप्रदत्त स्वायत्त)

Scanned with OKEN Scanner

Shri Swami Vivekanand Shikshan Sanstha's

VIVEKANAND COLLEGE, KOLHAPUR (EMPOWERED AUTONOMOUS)

2130, E Ward, Tarabai Park, Kolhapur, Maharashtra 416003

Student Marks Entry

Course:B.A.B.A. - FY SEM - I   Session:NEP 2.0 OCT - NOV 2024

Subject: HINDI GADYA SAHITYA AUR RACHANATMAK LEKHAN(2DSC01HIN11) - CIE

Min/Max : 4/10

Sr.No.	PRN No	Seat No	Student Name	Marks	Sports Marks
1	2024014001	33610	AAMANE TANUJA RAMESH	10	0
2	2024014009	33615	BAGWAN ASHPAK RAJU	10	0
3	2024014010	33616	PRAVIN PRABHAKAR BALNAIK	10	0
4	2024014012	33618	SHIVAJI VITTHAL BANSODE	10	0
5	2024014013	33619	BARGIR GULAMI IRFAN	10	0
6	2024014019	33621	PRATIKSHA BAJIRAO BUDHALE	10	0
7	2024014027	33626	SAYALI DADASO CHOUGULE	9	0
8	2024014031	33628	AMIR SAMEER DANAWADE	10	0
9	2024014041	33634	GANGWANI BHUMIKA JAYKUMAR	10	0
10	2024014042	33635	GARDI ASHFANA SAHIL	10	0
11	2024014048	33637	GONGANE TEJU UTTAM	10	0
12	2024014055	33641	SWATI DIPAK HINGOLE	10	0
13	2024014058	33643	PRAVIN ASHOK HOSMANI	9	0
14	2024014060	33645	ANJALI PRASHANT JADHAV	10	0
15	2024014067	33649	JAGDALE PRATIK MADHUKAR	10	0
16	2024014068	33651	JAMBAGI MAHADEVI SHIVAPPA	9	0
17	2024014069	33652	JAMBHALE PIYUSH ANANDA	9	0
18	2024014076	33657	KADAM TEJAS PRATAP	10	0
19	2024014078	33659	POONAM ANIL KALE	10	0
20	2024014079	33660	KAMBALE SNEHAL YOGESH	10	0
21	2024014081	33662	ADITYA KRUSHNAT KAMBLE	10	0
22	2024014083	33663	BHAGYASHRI BHIMRAO KAMBLE	8	0
23	2024014085	33664	KAMBLE HARSH RAJU	9	0
24	2024014087	33666	KAMBLE MADHURI SATAPA	9	0
25	2024014099	33671	SNEHAL SHIVAJI KAMBLE	10	0
26	2024014114	33679	VIDYA TANAJI KHADAKE	10	0
27	2024014115	33680	AYUSH RAJU KHADE	10	0
28	2024014116	33681	SAKSHI SATISH KHADE	9	0
29	2024014117	33682	ARPITA JEEVAN KHAMKAR	9	0
30	2024014118	33684	KHOPKAR SWAPNALI BABASAHEB	10	0
31	2024014119	33685	KHOT AMRUTA BALKRISHNA	10	0
32	2024014122	33688	KOTHAWALE BHAVANA NARESH	9	0
33	2024014139	33700	SIDDHI NANASO LOHAR	10	0
34	2024014140	33701	LOKARE USHA JALINDAR	10	0
35	2024014146	33706	NIKITA SANTOSH MAGDUM	9	0
36	2024014147	33707	MAHAT SAHIL NOORMAHMAD	9	0
37	2024014153	33714	MANE ANIKET ANIL	10	0
38	2024014159	33716	MASHAL AKIB RAFIK	9	0
39	2024014163	33718	MITAKE PRAJAKTA RANGRAO	10	0
40	2024014164	33719	MODIKAR SUMIT YUVRAJ	10	0
41	2024014168	33721	MORE MONIKA BALU	10	0
42	2024014171	33723	MULLANI KAYYUM YASIN	10	0

VIVEKANAND COLLEGE KOLHAPUR (Empowered Autonomous) ESTD JUNE 1964

Internal Examiner   Mobile Number

Scanned with OKEN Scanner

Shri Swami Vivekanand Shikshan Sanstha's

VIVEKANAND COLLEGE, KOLHAPUR (EMPOWERED AUTONOMOUS)

2130, E Ward, Tarabai Park, Kolhapur, Maharashtra 416003

Student Marks Entry

Course:B.A.B.A. - FY SEM - I

Session:NEP 2.0 OCT - NOV 2024

Sr.No.	PRN No	Seat No	Student Name	Marks	Sports Marks
43	2024014172	33724	MAHEK IMRAN MULLANI	10	0
44	2024014174	33726	NAJIYA RAKESH NADAF	10	0
45	2024014181	33731	NIGAVEKAR RASIKA MADHAV	9	0
46	2024014185	33734	PANDHARABALE PREM SAKHARAM	10	0
47	2024014190	33737	AAFTAB ABDULGANI PATEL	10	0
48	2024014193	33740	ATHARV AMAR PATIL	9	0
49	2024014196	33741	PATIL NEHA RANJIT	9	0
50	2024014201	33744	SANIKA SANJAY PATIL	8	0
51	2024014213	33751	HARSHWARDHAN MOHAN PINGALE	9	0
52	2024014214	33752	PREM NITIN PINGALE	10	0
53	2024014223	33755	SALOKHE ADITYA RANJEET	10	0
54	2024014225	33756	SANGALE RAGINI VIJAY	9	0
55	2024014226	33757	SANKPAL SIDDHI VIKAS	9	0
56	2024014228	33758	SUPRIYA RAMA SATHE	10	0
57	2024014229	33759	SAWANT RIYA NITIN	9	0
58	2024014230	33760	SAWANT SNEHAL BASAPPA	9	0
59	2024014233	33762	SHAIKH RAMJAN DASTAGIR	10	0
60	2024014240	33767	SHIKALGAR JAHIR JAMIR	10	0
61	2024014241	33768	SHIKALGAR TANJILA JAMIR	10	0
62	2024014243	33769	HARSHAL LAXMAN SHINDE	10	0
63	2024014247	33772	SHINGE RIDDHI AMAR	10	0
64	2024014248	33773	SHINGE SIDDHI AMAR	9	0
65	2024014251	33775	AVINASH KISHOR SHIVAGAN	9	0
66	2024014255	33777	ADITI SUKHDEV SUTAR	9	0
67	2024014262	33780	TAPEKAR PRANAV PRADIP	10	0
68	2024014265	33782	TIBILE KARUNYA YUVRAJ	9	0
69	2024014269	33783	NEETA YALLAPPA WALAWLKAR	10	0
70	2024014272	33785	RUSHIKESH DIPAK WAVARE	10	0
71	2024014035	33787	FUKATE VEDIKA VAIBHAV	10	0
72	2024014039	33788	GAIKWAD SATYAJIT SANJAY	9	0
73	2024014072	33790	JIRAGE YASH RATAN	10	0
74	2024014235	33794	SHAIKH SWALIHA IMRAN	9	0
75	2024014218	33802	POWAR YASH PRAKASH	9	0

VIVEKANAND COLLEGE KOLHAPUR (Empowered Autonomous) ESTD JUNE 1964

HEAD
DEPARTMENT OF HINDI
VIVEKANAND COLLEGE, KOLHAPUR
(EMPOWERED AUTONOMOUS)

Internal Examiner

Mobile Number

Scanned with OKEN Scanner

Bhagyashri Bhimrao Kamble

19914

Signature of Jr. Super.

8/10

(अधिकारप्रदत्त स्वायत्त)
कोल्हापूर

विवेकानंद कॉलेज, कोल्हापूर. (अधिकरप्रदत्त स्वायत्त)

______ परीक्षेच्या ______ या विषयाच्या प्रयोग परीक्षा

Practical Examination in, ______

at the ______ Examination

उमेदवराचा आसन क्रमांक (Candidate's Seat No.) 6083 विभाग (Section) हिंदी

उमेदवारांना सूचना

१. प्रश्न काळजीपूर्वक वाचा आणि त्याप्रमाणे विचारलेला प्रयोग करा.
२. उपकरणांच्या वापराबाबत तुम्हांला काही माहीत नसेल तर परीक्षक किंवा प्रयोगशाळा सहाय्यक यांना तुम्हाला मदत करण्याविषयी विनंती करा.
३. कोणताही विद्युतप्रयोग करण्यापूर्वी, प्रत्यक्ष पुरविलेली सर्व उपकरणे आणि सर्व 'कनेक्शन' नीट पाहून घेऊन संबंधित कामाची नीटनेटकी कार्ययोजना करण्याची नितांत आवश्यकता आहे आणि ह्यानंतर पुढे काम चालू करण्याविषयी परीक्षकांची परवानगी मिळविणे आवश्यक आहे.
४. सर्व निरीक्षणे कोटकवजा तक्त्यात भरावी. मधल्या सर्व गणना आणि निर्णय हे क्य तितक्या सुवाच्चपणे आणि स्पष्टपणे नोंदविलेले असणे हे हितावह आहे.
५. प्रारंभिक किंवा अंतिम निरीक्षणात संख्यावाचक आकडे एकावर एक लिहू नयेत. जर लिहिलेला कोणताही आकडा नको असेल तर त्यावर एक रेघ ओढून पाहिजे असलेला आकडा त्याच्याजवळ लिहा. प्रयोगशाळेतून बाहेर पडण्यापूर्वी आपले टेबल चांगल्या स्थितीत आहे याची खात्री करा.

INSTRUCTIONS TO CANDIDATES

1. Read the question carefully and perform the experiment as required.
2. If there by anything the apparatus that you do not know, ask the examiner or the laboratory assistant to help you.
3. Before doing any electrical experiment, it is absolutely essential that you make a neat working sketch of all apparatus actually provided and of the necessary connection and obtain the examiner's permission to proceed.
4. Express all observations in a tabular form. It is also desirable that all intermediate calculations and results should be entered as neatly and clearly as possible.
5. No numerical figures should be written over either in the preliminary or final observations. If any figure is shought to be discarded it should be run through and the desired figure written near to it.
6. Please see that your table is in good order before you leave the laboratory.

(येथून लेखनास सुरवात करा.) (Begin writing here.)

प्र. क्र. Q. No.

एक कुत्ता और एक मैना पाठ का भावार्थ लिखिए।

रवींद्रनाथ टैगोर का स्वास्थ्य अधिक खराब हो गया था। अत: उन्होंने सोचा कि शांतिनिकेतन छोड़कर अपने पैतृक मकान की तीसरी मंजिल पर एकांत में विश्राम करें क्योंकि दर्शनार्थी उन्हें आराम नहीं करने दे रहे थे। अत: एक दिन जब लेखक ने भी सपरिवार उनके दर्शन करने चाहे, तब लेखक को देखते ही रवींद्रनाथ बोले थे कि उनके साथ दर्शनार्थी भी है क्या? दर्शनार्थियों के समय-कुसमय पर आ टपकने के कारण वे परेशान हो जाते भयभीत से रहते थे।

Scanned with OKEN Scanner

02	Section	Q. No.												
		Marks												

प्र. क्र.
Q. No.

लेखक जब उनके पास पहुँचे, तब वे थोड़े अस्त-व्यस्त थे किंतु फिर भी सूर्य की ओर एकटक देख रहे थे। तभी उनका पालतु कुत्ता वहाँ आया और पूँछ हिलाने लगा। वह गुरुदेव के हाथ का स्पर्श पाकर मग्न हो गया था।

गुरुदेव ने कुत्ते को लक्ष्य बनाकर एक कविता लिखी जो आरोग्य में छपी है। उसमें वे कहते है कि मेरा कुत्ता मेरा स्पर्श पाकर उमंग से भर जाता है। बेजुबान पशु-पक्षियों में मनुष्यता के अनुभव की शक्ति होती है। वे भी मानवीय अच्छे-बुरे व्यवहार को महसुस कर सकते हैं। वे भी दीनता, स्वामिभक्ति, स्नेह तथा आत्मनिवेदन का प्रकट कर सकते हैं। ये मनुष्य की संवेदनशीलता, उसके सुख-दुख को समझते किंतु समझा नहीं पाते हैं।

लेखक गुरुदेव की सूक्ष्म संवेदनशील एवं मर्मभेदी दृष्टि पर आश्चर्यचकित है क्योंकि उन्होंने कुत्ते जैसे जानवर में भी मानवी विशेषता को अनुभव कर लिया। यह कोई सामान्य घटना नहीं, बल्कि विश्व की महिमाशाली घटनाओं में से एक मालूम होती है। उसके बाद जब गुरुदेव की चिताभस्म को आश्रम में लाया गया तो कुत्ता भी उत्तरायण तक गया और सारे मनुष्यों की भाँति कुछ देर तक मौन एवं शांत बैठा रहा। ऐसा देखकर लेखक के आश्चर्य का ठिकाना ही न रहा। गुरुदेव पशु-पक्षियों के प्रति अत्याधिक आत्मीय संबंध रखते थे। अतः आश्रम के पशु-पक्षियों के बारे में भी अकसर बातें करते रहते थे। एक दिन प्रातः टहलते समय उन्होंने पूछा था कि आश्रम के कौवे कहाँ चले गए। एक सप्ताह बाद सारे कौवे फिर वापस आश्रम में आ गए। तो लेखक को समझ में आया कि कौवे भी प्रवासी पक्षी हैं। एक बार लँगड़ी मैना को देखकर वे बोले कि यह यूथभ्रष्ट है, अतः इसमें करुण भाव है। उनकी बात सुनकर लेखक के मन में भी मैना के प्रति करुण भाव

ESTD JUNE 1964 ... Autonomous

Q. No.													03
Marks													

उत्पन्न हो गया।

हजारी प्रसाद जी के मकान में कुछ छेद है जिनमें एक मैना परिवार रहता है। वे पता नहीं कहाँ - कहाँ से फटे - पुराने कपड़ो को तथा दूसरे कूड़ा - करकट को ले आते है। लेखक ने एक बार तो ईंट रखकर छेद बंद भी कर दिया था किंतु वे बची हुई जगह में अपना निवास बना ही लेते है। लेखक को अनुभव होता हैं कि वे खुश होकर नाचते है, गाते है तथा उन्हें देखकर उन पर टीका - टिप्पणी करते हैं। मैना परिवार लेखक के घर को खाली स्थान समझता है। मैना पत्नी तो अकसर कहती है की लेखक को उनके प्राइवेट घर में नहीं आना चाहिए - पहले लेखक मैना के प्रति करुणावान नहीं थे किंतु गुरुदेव की बातें सुनकर उन्हें विश्वास हो गया कि मैना वास्तव में अपने साथी से बिछड़ गई है तथा एक वियोगिनी का जीवन जी रही है। लेखक कहते हैं कि गुरुदेव ने मैना पर एक कविता भी लिखी है। उस कविता का भाव है कि यह मैना अपने दल से अलग क्यों है? यह अकेले ही लँगड़ा कर घूम रही है। वह कीडों का शिकार करती है. वह लेखक से बिलकुल भयभीत नहीं है। पता नहीं यह अपने समाज से अलग क्यों रहती हैं? सारी मैनाएँ नाचती - कूदती हैं किंतु यह शोकाकुल है। पता नहीं कि इसे क्या पीड़ा है? किसने इसे चोट पहुँचाई है? न तो इसे किसी पर कोई अभियोग है, न जीवन में विरक्ति है और न आँख में जलन है। न जाने कौन - सी गाँठ इसके हृदय में पड़ी है।

गुरुदेव की इस कविता को पढ़ने के बाद लेखक के मन में मैना की करुण मूर्ति अंकित हो गई। लेखक आश्चर्य - चकित है कि गुरुदेव मैना के मर्मस्थल अर्थात दुख तक पहुँचे कैसे? उसी शाम मैना के उड़ जाने से कवि गुरुदेव बहुत दुखी हुए।

VIVEKANAND COLLEGE KOL
JUNE

Scanned with OKEN Scanner

Shri Swami Vivekanand Shikshan Sanstha's

VIVEKANAND COLLEGE, KOLHAPUR (EMPOWERED AUTONOMOUS)

2130, E Ward, Tarabai Park, Kolhapur, Maharashtra 416003

Student Marks Entry

Course: B.A.B.A. - FY SEM - I **Session:** NEP 2.0 OCT - NOV 2024

Sr.No.	PRN No	Seat No	Student Name	Marks	Sports Marks
Subject: BHAKTI SAHITYAGURU MAHIMA (IKS HINDI) (2IKS01HIN11) - CIE					
Min/Max : 4/10					
1	2024014010	33616	PRAVIN PRABHAKAR BALNAIK	10	0
2	2024014013	33619	BARGIR GULAMI IRFAN	10	0
3	2024014031	33628	AMIR SAMEER DANAWADE	10	0
4	2024014041	33634	GANGWANI BHUMIKA JAYKUMAR	10	0
5	2024014042	33635	GARDI ASHFANA SAHIL	10	0
6	2024014048	33637	GONGANE TEJU UTTAM	10	0
7	2024014055	33641	SWATI DIPAK HINGOLE	10	0
8	2024014058	33643	PRAVIN ASHOK HOSMANI	10	0
9	2024014067	33649	JAGDALE PRATIK MADHUKAR	9	0
10	2024014081	33662	ADITYA KRUSHNAT KAMBLE	9	0
11	2024014115	33680	AYUSH RAJU KHADE	10	0
12	2024014118	33684	KHOPKAR SWAPNALI BABASAHEB	10	0
13	2024014140	33701	LOKARE USHA JALINDAR	9	0
14	2024014147	33707	MAHAT SAHIL NOORMAHMAD	10	0
15	2024014164	33719	MODIKAR SUMIT YUVRAJ	10	0
16	2024014171	33723	MULLANI KAYYUM YASIN	10	0
17	2024014172	33724	MAHEK IMRAN MULLANI	10	0
18	2024014174	33726	NAJIYA RAKESH NADAF	10	0
19	2024014185	33734	PANDHARABALE PREM SAKHARAM	10	0
20	2024014190	33737	AAFTAB ABDULGANI PATEL	9	0
21	2024014223	33755	SALOKHE ADITYA RANJEET	10	0
22	2024014233	33762	SHAIKH RAMJAN DASTAGIR	10	0
23	2024014240	33767	SHIKALGAR JAHIR JAMIR	10	0
24	2024014241	33768	SHIKALGAR TANJILA JAMIR	10	0
25	2024014243	33769	HARSHAL LAXMAN SHINDE	10	0
26	2024014262	33780	TAPEKAR PRANAV PRADIP	10	0
27	2024014269	33783	NEETA YALLAPPA WALAWLKAR	9	0
28	2024014072	33790	JIRAGE YASH RATAN	10	0

VIVEKANAND COLLEGE KOLHAPUR (Empowered Autonomous) ESTD JUNE 1964

HEAD
DEPARTMENT OF HINDI
VIVEKANAND COLLEGE, KOLHAPUR
(EMPOWERED AUTONOMOUS)

Internal Examiner

Mobile Number

Scanned with OKEN Scanner

नाजिया शकेश नदाफ

॥ ज्ञान, विज्ञान आणि सुसंस्कार यांसाठी शिक्षण प्रसार ॥
– शिक्षणमहर्षी डॉ. बापूजी साळुंखे

Shri Swami Vivekanand Shikshan Sanstha Kolhapur's

43030

VIVEKANAND COLLEGE, KOLHAPUR (AUTONOMOUS)

SUPPLIMENT

Signature of Supervisor

Suppliment No. : 01

Roll No. : 4174

Class : B.A.F-Y

Subject : हिंदी

Test / Tutorial No. : IKS - हिंदी

Div. : 'B'

10/10 Twelve

* कबीर जी के गुरू पर अर्थ सहित दोहे *

१ जब मैं था तब गुरू नही, अब गुरू है मैं नाहिं।
प्रेम गली अति साकरी, तामें दो न समांही ॥

अर्थ : जब अहंकार रूपी मैं अन्दर समाया हुआ था तब मुझे गुरु नही मिले थे, अब गुरू मिल गये और उनका प्रेम रस प्राप्त होते ही मेरा अहंकार नष्ट हो गया। प्रेम की गली इतनी संकरी है, की इसमे एक साथ दो नही समा सकते अर्थात गुरू के रहते हुए अहंकार नहीं उत्पन्न हो सकता।

२ गुरू शरणगति छाड़ी के, करे भरोसा और।
सुख संपती को कह चली, नहीं नरक में ठौर ॥

अर्थ : संत जी कहते है कि जो मनुष्य गुरू के पावन पवित्र चरणों को त्यागकर अन्य पर भरोसा करता है उसके सुख संपती की बात ही

VIVEKANAND COLLEGE KOLHAPUR ESTD JUNE 1964 (Empowered Autonomous)

Scanned with OKEN Scanner

उसे नरक में भी स्थान नहीं मिलता।

3 गुरू समान दाता नहीं, याचक सीष समान।
तीन लोक की सम्पदा, सो गुरू दिन्ही दान॥

अर्थ : संपूर्ण संसार में गुरू के समान कोई दानी नहीं हैं और शिष्य के समान कोई याचक नहीं हैं। ज्ञान रूपी अमृतमयी अनमोल संपत्ति गुरू अपने शिष्य को प्रदान करके कृतार्थ करता हैं, और गुरू द्वारा प्रदान की जाने वाली अनमोल ज्ञान सुधा केवल याचना करके ही शिष्य पा लेता हैं।

4 गुरू गोविंद दोऊ खडे, काके लागु पाय।
बलिहारी गुरू आपने, गोविंद दियो बताय॥

अर्थ : गुरू और गोविंद (भगवान) दोनो एक साथ खड़े हों तो किसे प्रणाम करणा चाहिये - गुरू को अथवा गोविंद को। ऐसी स्थिती में गुरू के श्रीचरणों में शीश झुकाना उत्तम है जिनके कृपा रूपी प्रसाद से गोविंद का दर्शन प्राप्त करने का सौभाग्य हुआ।

5 कबीर गुरू सबको चहै, गुरू को चहै न कोय।
जब लग आश शरीर की, तब लग दास न होय॥

अर्थ : कबीर जी कहते है की सबको कल्याण करने के लिए गुरू सबको चाहते है, किन्तू गुरू को अज्ञानी लोग नहीं चाहते क्योंकी जब तब मायारूपी शरीर से मोह है तक तब तक प्राणी सच्चा दास नहीं सकता।

VIVEKANAND COLLEGE KOLHAPUR (Empowered Autonomous) ESTD JUNE 1964

Scanned with OKEN Scanner

६ गुरू आज्ञा मानै नहीं, चलै अटपटी चाल।
लोक वेद दोनों गये, आये सिर पर काल ॥

अर्थ : जो मनुष्य गुरू की आज्ञा की अवहेलना करके अपनी इच्छा से कार्य करता हैं। अपनी मनमानी करता है ऐसे प्राणी का लोक-परलोक दोनों बिगड़ता हैं और काल रूपी दु:खो से निरन्तर घिरा रहेगा।

७ गुरू को सर पर राखिये चलिये आज्ञा माहि।
कहैं कबीर ता दास को, तीन लोक भय नाहीं ॥

अर्थ : गुरू को अपने सिर का गज समझिए अर्थात दुनिया में गुरू को सर्वश्रेष्ठ समझना चाहिए क्योंकी गुरू के समान अन्य कोई नहीं हैं। गुरू की आज्ञा का पालन सदैव पूर्ण भक्ति एवम् श्रद्धा से करने वाले जीव को संपूर्ण लोकों में किसी प्रकार का भय नहीं रहता। गुरू की आज्ञा का पालन, गुरू कि परमकृपा और ज्ञान बल से निर्भय जीवन व्यतीत करता हैं।

८ कबीर ते नर अन्ध हैं, गुरू को कहते और।
हरि के रूठे ठौर है, गुरू रूठे नहिं ठौर ॥

अर्थ : कबीरदास जी कहते है कि वो मनुष्य अंधो के समान है जो गुरू के महत्व को नही समझते। भगवान के रूठने पर स्थान मिल सकता है. किन्तू गुरू के रूठने पर कही स्थान नहीं मिलता हैं।

VIVEKANAND COLLEGE KOLHAPUR (Empowered Autonomous) ESTD JUNE 1964

Scanned with OKEN Scanner

Shri Swami Vivekanand Shikshan Sanstha's

VIVEKANAND COLLEGE, KOLHAPUR (EMPOWERED AUTONOMOUS)

2130, E Ward, Tarabai Park, Kolhapur, Maharashtra 416003

Student Marks Entry

Course:B.Com.B.COM. - FY SEM - I

Session:NEP 2.0 OCT - NOV 2024

Sr.No.	PRN No	Seat No	Student Name	Marks	Sports Marks
Subject: HINDI - I (2OEC02HIN11) - CIE					
Min/Max : 7/20					
1	2024025476	55810	BHOOMI SUNIL AGARWAL	20	0
2	2024025479	55815	ATIGRE SWAYAM KUMAR	15	0
3	2024025485	55822	MIHIR MILIND BARVE	20	0
4	2024025486	55823	ANUSHKA DILIP BAVANE	20	0
5	2024025487	55824	SIDDHI DATTATRAY BAVANE	20	0
6	2024025491	55830	BOBADE GULAMMURTAZA YASIN	20	0
7	2024025492	55832	BHAVESH KOOPARAM CHAUDHARI	16	0
8	2024025494	55835	CHAVAN SIDDHI SAMBHAJI	20	0
9	2024025496	55836	VAISHNAVI BABURAO CHAVAN	20	0
10	2024025498	55838	DARSHAN SANDEEP CHIMANE	20	0
11	2024025612	55840	SADIKAKHATOON DOSTMOHAMMAD CHOUDHARY	20	0
12	2024025501	55852	DESAVALE VEDANT VIVEK	15	0
13	2024025502	55854	DEVALE MUSTAFA FIROZ	20	0
14	2024025507	55862	SWALIHA ASIF FAKIR	20	0
15	2024025514	55882	MITALI VIKAS GUNDE	20	0
16	2024025515	55884	KARTIK RAJESH GURAV	20	0
17	2024025516	55885	PRIYANKA DANAPPA GURAV	20	0
18	2024025336	55891	JADHAV ATHARVA NILESH	20	0
19	2024025519	55892	JADHAV RANVEER AMOL	20	0
20	2024025698	55896	JADHAV YASH ANIL	20	0
21	2024025522	55910	KALEKAR SHREYA AMAR	15	0
22	2024025636	55912	KAMBLE ARUNA RAJENDRA	16	0
23	2024025638	55913	KAMBLE HARSHAD RAJANIKANT	15	0
24	2024025639	55914	KAMBLE MANASI ANIL	20	0
25	2024025526	55926	KHADE PREM SUNIL	15	0
26	2024025527	55928	SANIYA JAINUL KHAN	20	0
27	2024025529	55938	KULKARNI OM AVDHUT	16	0
28	2024025531	55940	PRATHAMESH PRASHANT KURANE	20	0
29	2024025534	55952	LAXMAN PRABHURAM MALI	20	0
30	2024025535	55953	LOKESH SOMARAM MALI	20	0
31	2024025538	55960	MANIYAR LIMRA SHAHNAWAJ	20	0
32	2024025539	55962	MAYURI MAHADEV METIL	20	0
33	2024025540	55964	TANISHA UDAY MITHARI	20	0
34	2024025541	55966	SHAFKATHUSEN SAKHAVATHUSEN MOMIN	20	0
35	2024025545	55971	VAISHNAVI SARJERAO MORE	20	0
36	2024025547	55974	MULIK SWAROOP CHINTAMANI	20	0
37	2024025548	55976	MAYURI SANJAY MURTI	15	0
38	2024025551	55979	AYESHA FIROJ NAGARAJI	20	0
39	2024025555	55984	SHRUSHTI KRUSHNAT NIKAM	16	0
40	2024025562	56005	NIKHIL JALANDHAR PATIL	15	0
41	2024025564	56012	PRUTHVIRAJ SAMPAT PATIL	20	0

VIVEKANAND COLLEGE KOLHAPUR ESTD JUNE 1964 (Empowered Autonomous)

Internal Examiner

Mobile Number

Scanned with OKEN Scanner

Shri Swami Vivekanand Shikshan Sanstha's

VIVEKANAND COLLEGE, KOLHAPUR (EMPOWERED AUTONOMOUS)

2130, E Ward, Tarabai Park, Kolhapur, Maharashtra 416003

Student Marks Entry

Course: B.Com.B.COM. - FY SEM - I

Session: NEP 2.0 OCT - NOV 2024

Sr.No.	PRN No	Seat No	Student Name	Marks	Sports Marks
42	2024025390	56032	PATIL VIRAJ SARDAR	20	0
43	2024025569	56038	PRAGATI NAGRAJ PAWAR	20	0
44	2024025574	56047	TIPANNA NAGESH PUJARI	20	0
45	2024025396	56048	NILAMKUMARI NARAYANLAL PUROHIT	20	0
46	2024025575	56049	JANHAVI VILAS RABADE	16	0
47	2024025583	56061	SANKPAL ADITYA PRASHANT	20	0
48	2024025682	56064	SATPUTE SARTHAK DEEPAK	15	0
49	2024025590	56074	SANIYA BABASO SHAIKH	20	0
50	2024025700	56082	SHIRKE OMKAR SANTOSH	16	0
51	2024025699	56083	SHITOLE SHREYA PRITHVIRAJ	15	0
52	2024025594	56093	REHAN JAVED TAMBOLI	20	0
53	2024025598	56105	ULAPE SAMIKSHA DEEPAK	16	0
54	2024025695	56111	SOHEL CHAND WARUNKAR	20	0
55	2024025489	56131	BHOSALE VIVEK PARSHURAM	15	0
56	2024025503	56135	DHANKWALA BUSHRA AKHTAR	16	0
57	2024025571	56141	POWAR PAYAL RAJU	15	0
58	2024025683	56143	ADITYA PRABHAKAR SAWANT	16	0
59	2024025600	56145	VARMA ANJALI RAKESH	20	0
60	2024025480	56149	AWALE OMKAR DIPAK	16	0
61	2024025668	56150	PATIL RAJ DATTA	16	0

VIVEKANAND COLLEGE KOLHAPUR (Empowered Autonomous) ESTD JUNE 1964

HEAD
DEPARTMENT OF HINDI
VIVEKANAND COLLEGE, KOLHAPUR
(EMPOWERED AUTONOMOUS)

Internal Examiner

Mobile Number

Scanned with OKEN Scanner

॥ ज्ञान, विज्ञान आणि सुसंस्कार यांसाठी शिक्षण प्रसार ॥
– शिक्षणमहर्षी डॉ. बापूजी साळुंखे

Shri Swami Vivekanand Shikshan Sanstha Kolhapur's 59768

VIVEKANAND COLLEGE, KOLHAPUR (AUTONOMOUS)

SUPPLIMENT

Signature of Supervisor	
Suppliment No. :	Subject : Hindi.
Roll No. : 55884	Test / Tutorial No. :
Class : B-Com (F.Y)	Div. : Group B.

20/20

Kartik Rajesh Gurav

गजाधर बाबू के चरित्र चित्रण -

'वापसी' कहानी गजाधर बाबू को केंद्र में रखकर लिखी गई है इसलिए कहानी में मुख्य चरित्र गजाधर बाबू हैं और उन्हीं का चरित्र सबसे अधिक मुखर होकर सामने आता है। इनके अलावा उनकी पत्नी का चरित्र दूसरें पात्रों की तुलना में ज्यादा उभरकर आता है। शेष सभी पात्र कहानी की जरुरत के अनुसार आते - जाते रहते हैं और उनका चरित्र बहुत उभरकर आता है नहीं आता। लेकिन उनसे जुडे जो भी प्रसंग सामने आते हैं उनसे उनके चरित्र की केंद्रीय विशेषताओं की पहचान हो जाती है। अपने सीमित कलेवर के कारण कहानी मे बहुत अधिक पात्र हो भी नहीं सकते। यह कहानी लेखिका के शिल्प की विशेषता है कि उन्होंने कथावस्तु का गठन इस तरह किया है। कि पात्रों की चारित्रिक विशेषतायें स्वत: ही उभर आती हैं। सबसे पहले हम गजाधर बाबू के व्यक्तित्व की विशेषताओं को पहचानने की कोशिश करते हैं।

VIVEKANAND COLLEGE KOLHAPUR ESTD JUNE 1964 (Empowered Autonomous)

वापसी कहानी के नायक

गजाधर बाबू को इस कहानी का केंद्रीय पात्र या नायक कहा जा सकता है। पुरी कहानी उन्हीं के इर्दगिर्द घुमती है। गजाधर बाबू पर केंद्रित होने के बावजूद इसे चरित्र प्रधान कहानी कहना उचित नहीं है क्योंकि कहानी का मकसद गजाधर बाबू के चरित्र को उभारना नहीं है बल्कि उनके माध्यम से परिवारो मे वृद्ध लोगों की बदलती स्थिति को ~~इस~~ दर्शाना है। गजाधर बाबू वैसे तो घर के मुखिया है और परंपरागत दृष्टि से देखने पर उनकी इच्छा और आदेश ही पूरे परिवार के लिए सर्वमान्य होने चाहिए। वह इसका प्रयत्न भी करते है कि घर के सभी सदस्य उनके कहे अनुसार चले लेकिन ऐसा होता नहीं। उनके इस आदेश देने की कोशिशो को घर के ~~अनुसार~~ दूसरे सदस्य बहुत पसंद नहीं करते बल्कि अपने-अपने ढंग से उसका विरोध भी करते हैं। यही नहीं उनका घर में मौजुद रहना भी शेष सदस्यों को अखरने लगता है। कहानी यह स्पष्ट नहीं करती कि पत्नी और बच्चो का बदला हुआ व्यवहार किस वजह से है। अपने परिवार से दूर रहने के कारण या परिवार के बदलते ढाँचे के कारण।

सहृदय और स्नेहशील

वे सहृदय और संवेदनशील व्यक्ति हैं। अपने घर-परिवार के सदस्यों के प्रति ही नहीं उनके संपर्क मे आने वाले दुसरों लोगों के प्रति भी वे स्नेह का भाव रखते हैं। गनेशी का उदाहरण हमारे सामने है जिसको वे बहुत ही प्रेम से याद करते हैं। अपनी पत्नी के प्रति भी उनके मन मे गहरा लगाव हैं और नौकरी से रिटायर होने के बाद जल्दी से जल्दी घर पहुंचने कि इच्छा के पीछे अपनी पत्नी के प्रति उनका यह लगाव भी है। पत्नी को

VIVEKANAND COLLEGE KOLHAPUR (Empowered Autonomous) ESTD JUNE 1964

लेकर कई मधुर स्मृत्तियां उनके मन में बसी हुई हैं। अपने बच्चों के प्रति भी स्नेह का भाव उनके मन में है।

पारिवारिक व्यक्ति

उनमें अपने घर-परिवार के प्रति जिम्मेदारी का बोध है। इसी वजह से वे बच्चों को टोकते हैं लेकिन उनकी इस भावना को बच्चे समझ नहीं पाते और उन्हें लगता है कि पिता उन पर शासन चलाने की कोशिश कर रहे हैं। माता-पिता और बच्चों में जिस तरह का संवाद होना चाहिए उसका अभाव भी नजर आता है। उनकी बेटी बसंती का उदाहरण लिया जा सकता है। अपनी पत्नी के काम के बोझ को हल्का करने के इरादे से जब वे यह फरमान जारी करते हैं कि सुबह का खाना बहू बनाएगी और शाम का खाना बसंती, तो बसंती यह कहते हुए विरोध करती है कि उसे कॉलेज भी जाना होता है। लेकिन पिता बेटी को समझाते हुए तर्क देते हैं, तुम सवेरे पढ़ लिया करो। तुम्हारी माँ बूढ़ी हुई। उनके शरीर में अब वह शक्ति नहीं बची है। तुम हो, तुम्हारी भाभी है, दोनों को मिलकर काम में हाथ बंटाना चाहिए। लेकिन बात यहीं खत्म नहीं होती माँ कि नजरों में बसंती का काम से जी चुराने के पीछे मुख्य कारण अपनी सहेली शिला के यहाँ जाना है जहाँ उन्हीं के अनुसार 'बड़े-बड़े लड़के हैं। एक पिता के लिए यह कथन निश्चय ही चिंता का विषय है। एक कुंवारी लड़की ऐसे घर में बार-बार आये जाये 'जहां जवान लड़के हो तो उसका चिंतित होना स्वाभाविक है। और इसी वजह से वह जब एक दिन बसंती को शिला के घर जाते हुए देखते हैं तो उसे जाने से रोक देते हैं। बेटी नाराज हो जाती है और वह खाना-पीना छोड़ देती है। बेटी के इस तरह रूठ जाने से मां दुखी हो जाती है और वह इसके लिए अपने पति को दोषी मानती है: 'क्या कह दिया बसंती से? शाम में मुँह लपेटे पड़ी है। खाना भी नहीं खाया।

VIVEKANAND COLLEGE KOLHAPUR ESTD JUNE 1964 Empowered Autonomous

परंपरावादी दृष्टिकोण

गजाधर बाबू का जीवन संबंधी नजरिया परंपरावादी है। उनका मानना है कि स्त्रियों का कर्त्तव्य घर में रहना और घर के काम में हाथ बँटाना है। पढ़ाई उनके लिए इतनी जरुरी नहीं है। उनको ज्यादा स्वतंत्रता देना भी उचित नहीं है। यही नजरियाँ उनकी पत्नि का भी है और इसी कारण वह अपने पति से शिकायत भी करती है लेकिन उसने बदली हुई परिस्थितियों के साथ अपने को एडजस्ट भी कर लिया है। जबकि पिता में वैसा लचीलापन नहीं है जो एक पिता में होना चाहिए कम-से कम जवान बच्चों के साथ वह सिर्फ आदेश द्वारा अपनी बातें नही मनवा सकता। विडंबना यह है कि गजाधर बाबू अपनी बेटी पर आदेश चलाते हैं। बहू और पत्नि से भी उनकी अपेक्षाएँ है लेकिन बेटों को वे कुछ नहीं कहते। बसंती के बनाये खाने पर छोटा बेटा यह टिप्पणी करते हुए खाना छोड़कर उठ जाता है कि मैं ऐसा खाना नहीं खा सकता। लेकिन बेटे के ऐसे व्यवहार पर गजाधर बाबु उसे कुछ नहीं कहते, बेटी की शिकायत पत्नी से करते हैं कि इतनी बडी लड़की हो गई है और उसे खाना बनाने तक का शौर नही आया। बेटे और बेटी के बिच फर्क करने का जो रूढ़िवादी नज़रिया है वह गजाधर बाबू के पूरे व्यवहार में झलकता है।

20

VIVEKANAND COLLEGE KOLHAPUR (Empowered Autonomous) ESTD JUNE 1964

Scanned with OKEN Scanner

Shri Swami Vivekanand Shikshan Sanstha's

VIVEKANAND COLLEGE, KOLHAPUR (EMPOWERED AUTONOMOUS)

2130, E Ward, Tarabai Park, Kolhapur, Maharashtra 416003

Student Marks Entry

Course:B.A.B.A. - SY SEM - III

Session:NEP 1.0 OCT - NOV 2024

Subject: HINDI KAHANI AUR SINEMA-1 (MIN01HIN31) - CIE

Min/Max : 4/10

Sr.No.	PRN No	Seat No	Student Name	Marks	Sports Marks
1	2023014302	40934	AMAN AJIT BHIVDARNE	10	0
2	2023014040	40945	SHRADHA SANJAY DABHADE	10	0
3	2023014111	40984	RITESH ANIL KAMBLE	10	0
4	2023014152	41002	KOLI SHREYA SANJAY	10	0
5	2023014162	41004	NISHIGANDHA PINTU LAD	10	0
6	2023014306	41015	NIKHIL DADASO MARLE	10	0
7	2023014178	41016	MELKERI SHIVRAJ PARSAPPA	10	0
8		41029	PATIL PRITAM YUVRAJ	9	0
9	2023014240	41036	VAISHNAVI SANJAY POWAR	10	0
10	2023014307	41052	SUTAR VAISHNAVI NANDKUMAR	9	0
11	2023014138	41078	DIPALI KRISHNA KHUTALE	9	0

VIVEKANAND COLLEGE KOLHAPUR (Empowered Autonomous) ESTD JUNE 1964

HEAD
DEPARTMENT OF HINDI
VIVEKANAND COLLEGE, KOLHAPUR
(EMPOWERED AUTONOMOUS)

Internal Examiner

Mobile Number

Scanned with OKEN Scanner

|| ज्ञान, विज्ञान आणि सुसंस्कार यांसाठी शिक्षण प्रसार ||
– शिक्षणमहर्षी डॉ. बापूजी साळुंखे

42711

Shri Swami Vivekanand Shikshan Sanstha Kolhapur's

VIVEKANAND COLLEGE, KOLHAPUR (AUTONOMOUS)

SUPPLIMENT

निशिगंधा पिंटू लाड

Suppliment No. :

Roll No. : 4441

Class : B.A.SY

10/10

Typed

Signature of Supervisor	

Subject : Hindi

Test / Tutorial No. :

Div. :

बंधुआ दलिद्दर कहानी में चित्रीत राजनितीक षड्यंत्र व्यंग स्पष्ट कीजीए।

ना पार्थसारथी लिखीत 'बँधुआ दलिद्दर' कहानी राजनीतिक षडयंत्र का पर्दाफाश करती है। बँधुआ दलिद्दर मूलत: तमिल कहानी है जिसका अनुवाद र शौरिराजन ने किया है। अडैक्कलम तामिलनाडु के सेलम जिले का निवासी है सेलम जिले में काम न मिलने की वजह से और भुखमारी से बचने हेतु अडैक्कलम मध्यप्रदेश के भोपाल के आसपास के पहाडी इलाके, जंगल-प्रदेश आदिवासी गाँव में ठेकेदार अग्रवाल के पास पनाह लेता है। पति-पत्नी और दस साल का बेटा तीनों की अथक मेहनत से जैसे-तैसे पुरे परिवार का गुजारा हुआ करता था। महावार पचास रूपये के एवज में तीनों को दिनभर पत्थर तोड़ने का काम करते हैं। यह मजदुरी सुबह से लेकर शाम अंधेरा घिर जाने तक हुआ करती थी। समय की पाबंदी नहीं, श्रमिक कानून की सुविधाओं की भनक तक नहीं। राष्ट्र की प्रमुख योजनाएँ, समाज कल्याण केंद्र, संस्थान, प्रतिष्ठान, मंत्रालय, महकमे शुरू हैं, जो दलित दलिद्दरो की तरक्की के लिए बनाए है। रहने के लिए एक छोटी-सी झोपडी हुआ करती थी झोपडी हुआ करती थी। झोपडी के आस-पास साग-सब्जी और धान की खेती के लिए मामूली सहूलियत हुआ करती लोगो द्वारा तोड़े गए पत्थर के टुकडे, गिट्टियाँ स

Scanned with OKEN Scanner

इमारत, पूल आदि काम के टुकडे गिट्टियाँ - सडक, घर, इमारत.
पुल आदि काम के लिए छोटे - बडे शहरों में पहुँचाने के लिए
हफ्ते में एक दिन लारियाँ आती थी।

बँधुआ मजदूर सिर न उठाने, मांग पेश कर गडबड न करने और उनका पूरा प्रबंध करने के लिए गुंडो की जमात के साथ - साथ अनुकूल अफसरों, अमलाफैलो का हुजूम भी पूरी मदद करता था।

अर्डक्कलम परिवार की बदकिस्मती से तमिलनाडु की राजनीती में तिलस्मी चकाचौंध से नयी हवा खुब चलने लगी। इस दौरान शासक दल के पी. साहब मुलरसू किसी एक राष्ट्रिय समारोह के लिए भोपाल पधारे थे। सासद महोदय ने अर्डक्कलम परिवार की पूरी जानकारी ले ली। पी. एम साहब को ताज्जुब हुआ कि तीन जनों से पूरा दिन काम लेकर महिने में सिर्फ पचास रूपये देते है। सासद अर्डक्कलम से मालिक की पूरी जानकारी लेता है।

वापस आने पर डाक बँगले में सारा विवरण अपनी डायरी में नोट कर लेता है। पी. एम साहब के चुनाव क्षेत्र में अधिकांश मतदाता काफी ऊब चुके थे। इस बार उनका पता कट होना तय था। मुलरसू ने मन ही मन गुप्त योजना बनाई दिन भर मेहनत के बावजूद एक जून का खाना नही मिलता। ऐसी गुलामी की जंजीर से जकडे तमिल भाई - बहनों को आजाद कराके और उन्हे इज्जत के साथ जीने की सुविधाएँ मुहैया कराके ही दम लूंगा। प्रमुख शहरों में मुत्तरसु के बयानों के बड़े - बड़े पोस्टर लगाए गए। राज्य और केंद्र की पुलिस की मदद से एम. पी. साहब अर्डक्कलम और उनके परिवार को छुडा लाता है। हमें अपने देश ले जाकर हमारी दुर्दशा का टीमटाम न पिटवा दीजीएगा। जिसमें मुल्लरसू को बंधुआ विमोचक वीरवर की उपाधि से सम्मानित किया गया। मुत्तरसु के बंगले में आउट हाऊस मे अर्डक्कलम परिवार के निवास और भोजन की सुविधाएँ दी गयी।

रोज शाम मीटींग जाते वक्त मुल्लरसु के साथ जीप में अर्डक्कलम परिवार को भी नुमाइश के लिए ले जाते

VIVEKANAND COLLEGE KOLHAPUR (Empowered Autonomous) ESTD JUNE 1964

गया। योजनाबद्ध तरीके से चुनाव का सारा सरजाम पूरा हुआ पी.एम साहब ने पार्टी प्रवर्तक के बड़े नेता की अध्यक्षता में विजय की खुशी में एक विशाल सभा का आयोजन किया गया। तीसरे दिन सुबह एम पी साहब ने अड़ेक्कलम को बुलाकर सौ रुपये का नोट थमाकर अपने गाँव जाने के लिए कहा और घर खाली करने के लिए कहा गया। अड़ेक्कलम ने गिड़गिड़ाकर काम दिलाने हेतु अर्ज किया। तुम गाँव चले जाओ, तुम्हें चिट्ठी आ जाएगी। कई शहरों में गाँवों मे भिखारी बनकर घूमता फिरता रहा। कोई काम नही मिला। भीख माँगना, डाँट-फटकर खाना, भूखमारी झेलना, बहुत कम पैसे पर भारी मेहनत करना पुलिस और चोर-उच्चकों से पाला पड़ना आदि से अड़ेक्कलम तंग आ गया। वह परिवार समेत टिकत लिये ट्रेन मे बैठ गया। वह परिवार समेत टिकट लिये ट्रेन मे बैठ गया और हाय-तोबा करके भोपाल पहुँचा सीधे ठेकेदार अग्रवाल के पास गया। पैर पकडकर माफी माँगी, फिर से काम देने के लिए गिड़गिड़ाया। फिर कभी ऐसी गलती न करूँगा आप हमारी रक्षा कीजिए। अग्रवाल ने सजा के रूप मे माहवार पचास के बदले चालिस रुपया तय किया और उसी जंगली इलाके मे पत्थर तोडकर गिट्टीयाँ तैयार ~~करके~~ करने के काम मे लगवा दिया। उसने ठेकेदार से थोड़ा सा कर्ज लिया और अपना घर बसा लिया। उसे एहसास हुआ कि वह बंधुआ मजदूर भले ही रहे, उसी अपनी मेहनत की कमाई पर जीने का मौका तो मिल गया। वह बार-बार यह महसूस करता रहा की अपने प्रदेश एम पी साहब के बहकावे में और उनका भरोसा कर जो कुछ महिने यहाँ से अलग होकर वह जीत रहा, वही असल मे ~~श्रम~~ शर्मनाक गुलामी का जीवन था।

सारांश रूप में कहा जा सकता है कि ना. पार्थसारथी लिखित 'बंधुआ दलिद्दर' कहानी राजनितिक षडयंत्र की यथार्थ गाथा है। कहानी में बंधुआ मजदूर के जीवन की दरिद्रता रेखांकित की है। अड़ेक्कलम परिवार एम. पी

VIVEKANAND COLLEGE KOLHAPUR (Empowered Autonomous) ESTD JUNE 1964

Scanned with OKEN Scanner

साहिब मुलरसु के बहकावे मे आ जाता है और बदले मे उसे भीख मांगकर गुजारा करना पडता है। वह बंधुआ मजदूर अपनी मेहनत की कमाई पर जीने में स्वाभिमान समझता है। उसे इस बात का दुख है की अपने प्रदेश के एक पी साहब के बहकावे में और उनका भरोसा पी. साहब के बहकावे में और उनका भरोसा कर जो कुछ महीने ठेकदार अग्रवाल से अलग होकर जीवन जीया असल मे वही उसके लिए शर्मनाक गुलामी का जीवन था। राजनेता अपने राजनीतिक स्वार्थ हेतु किस प्रकार आम मजदूर का इस्तेमाल करता है. और जीत जाने उसे अपनी हालात पर छोड़ देता है। जिससे वह भीखारी बनकर रह जाता है। राजनेता कितने गिरे हुए हैं। इसका सशक्त उदाहरण बंधुआ दवितदर कहानी है। यह कहानी राजनितिक षडयंत्र का पर्दाफाश करती है।

10

VIVEKANAND COLLEGE KOLHAPUR (Empowered Autonomous) ESTD JUNE 1964

Shri Swami Vivekanand Shikshan Sanstha's

VIVEKANAND COLLEGE, KOLHAPUR (EMPOWERED AUTONOMOUS)

2130, E Ward, Tarabai Park, Kolhapur, Maharashtra 416003

Student Marks Entry

Course:B.A.B.A. - SY SEM - III   Session:NEP 1.0 OCT - NOV 2024

Subject: HINDI AUR PATKATHA LEKHAN(DSC01HIN31) - CIE

Min/Max : 4/10

Sr.No.	PRN No	Seat No	Student Name	Marks	Sports Marks
1	2023014014	40932	SHREYA VISHWAS BARALE	10	0
2	2023014317	40936	YASH MANOHAR BHURKE	10	0
3	2023014024	40937	BODAKE SAMARTH SAGAR	10	0
4	2023014075	40961	HALWANKAR PRATHAMESH MARUTI	9	0
5	2023014084	40967	JADHAV SHRIDATTA RAJENDRA	10	0
6	2023014091	40973	KIRTIKA SURESH KADAM	10	0
7	2023014124	40988	KAMBLE TEJAS SUNDAR	10	0
8	2023014126	40989	SIZAN HUSSAIN KAPDI	10	0
9	2023014168	41007	CHAITANYA UMAKANT MACHHALE	10	0
10	2023014174	41013	MALKEKAR KRISH AATISH	10	0
11	2023014203	41023	PARAJI PAYAL SANJAY	10	0
12	2023014256	41043	SATTARMEKAR SAHAD SAMIR	10	0
13	2023014270	41046	SHINDE SIDDHARTH ARJUN	10	0
14	2023014274	41048	PRAJAKTA SAGAR SHINGE	10	0
15		41062	Patil Neha Arvind	10	0
16	2023014121	41064	KAMBLE SURAJ MAHADEV	10	0
17	2023014022	41072	BIRAJADAR MANDIRA VIJAY	10	0

VIVEKANAND COLLEGE KOLHAPUR (Empowered Autonomous) ESTD JUNE 1964

HEAD
DEPARTMENT OF HINDI
VIVEKANAND COLLEGE, KOLHAPUR
(EMPOWERED AUTONOMOUS)

Scanned with OKEN Scanner

।। ज्ञान, विज्ञान आणि सुसंस्कार यांसाठी शिक्षण प्रसार ।।
– शिक्षणमहर्षी डॉ. बापूजी साळुंखे

39899

Shri Swami Vivekanand Shikshan Sanstha Kolhapur's

VIVEKANAND COLLEGE, KOLHAPUR (AUTONOMOUS)

SUPPLIMENT 10/10

Signature of Supervisor	
Subject : Hindi (Major)	
Test / Tutorial No. :	
Div. :	

Suppliment Name :- Payal Sanjay Paraji

Roll No.

Class B.A (II)

प्र9. शतरंज के खिलाड़ी कहानी की प्रासंगिकता लिखिए।

→ शतरंज के खिलाड़ी मुंशी प्रेमचंद की हिन्दी कहानी है इसकी रचना उन्होंने अक्टूबर 1924 में की थी और यह माधुरी पत्रिका में छपी थी। 1977 में सत्यजीत राय ने इसी नाम से इस कहानी पर आधारित एक हिंदी फिल्म बनायी।

इस कहानी में प्रेमचंद ने वाजीदअली शाह के वक्त के लखनऊ को चित्रित किया है। भोग-विलास में डूबा हुआ यह शहर राजनीतिक-सामाजिक चेतना से शून्य है। पूरा समाज इस भोग-विलास में शामिल है। इस कहानी के प्रमुख पात्र हैं मिरजा सज्जाद अली और मीर रोशन अली। दोनों वाजिदअली शाह के जागीरदार हैं। जीवन की बुनियादी जरूरतों के लिए उन्हें कोई चिन्ता नहीं है। दोनों गहरे मित्र हैं और शतरंज खेलना चाकर है समय से नाश्ता-खाना, पाना-तम्बाकू आदि उपलब्ध होता रहता है।

एक दिन की घटना है-मिरजा सज्जाद अली की बीवी बीमार हो जाती हैं। वह बार-बार नौकर को भेजती हैं कि मिरजा हकीम के यहां से जाकर दवा लाये, किंतु मिरजा तो शतरंज में डूबे हुए हैं। उन्हें लगता है कि बस अगली बाजी उनकी है।

Vivekanand College Kolhapur (Empowered Autonomous) Estd. June 1964

Scanned with OKEN Scanner

अंत में तंग आकर मिरजा की बेगम उन दोनों को खरी - खोटी सुनाती है। खेल का सारा ताम-झाम उठाके कि बाहर फेंक देती हैं। नतीजा यह निकलता है कि शतरंज की बाजी अब मिरजा को यहाँ से उठकर मीर के दरवाजे जा बैठती है।

मीर साहब की बीवी शुरु में तो कुछ नहीं कहती लेकिन अब बात हद से आगे बढने लगती है तब इन दोनों खिलाडियों को मात देने के लिए वह एक नायाब तरकीब निकलती है। जैसा कि हमेशा होता था दोनों मित्र शतरंज की बाजियों में खोये हुए थे कि उसी समय बादशाही फौज का एक अफसर मीर साहब का नाम पूछता हुआ आ खडा होता है। उसे देखते ही मीर साहब के होश उड गये। वह शाही अफसर मीर साहब के नौकरी पर खुब रोब गालिब करता है और मीर के न होने की बात सुनकर अगले दिन आने की बात करता है। इस प्रकार यह तमाशा खत्म होता है। दोनों मित्र चिंतित हैं इसका क्या समाधान निकाला जाया।

मीर और मिरजा भी छोटे खिलाडी नहीं थे। उन्होंने भी गजब की तोड निकाली। दोनों मित्रों ने एक बार पुनःस्थान परिवर्तन करके ही अपना पडाव माना। न होंगे न मुलाकात होगी। इधर बेगम आजाद हुई उधर मीर बेपरवाह नया ठिकाना था शहर से दूर गोमती के किनारे एक विरान मस्जिद। वहाँ लोगों का आना - जाना बिलकुल नहीं था। साथ में जरुरी सामान जैसे हुक्का चिलम दरी आदि ले लिये। कुछ दिनों ऐसा ही चलता रहा। एक दिन अचानक मीर साहब ने देखा कि अंग्रेजी फौज गोमती के किनारे - एक विरान मस्जिद। वहीं किनारे चली आ रही है। उन्हों ने मिरजा से हडबडी में यह बात बताई। [illegible] कहा तुम अपनी चाल बचाओ। अंग्रेज आ रहे

NAND COLLEGE KOLHAPUR ESTD JUNE 1964 (Empowered Autonomous)

अपने दो मीर कहा साथ में पीकदान भी है। साहब ने कहा - यह मौका किसी और को देना। इस प्रकार पुनः दोनो खेल में गुम हो गए।

कुछ समय में नवाब वाजिद अली शाह कैद कर लिए गए। उसी रास्ते अंग्रेजी सेना विजयी भाव से लौट रही थी। पूरा शहर बेशर्मी के साथ तमाशा देख रहा था। अवध का इतना बडा नवाब चुपचाप सर झुकाए चला जा रहा था। मीर और रोशन दोनो इस नवाब के जागीरदार थे। नवाब की रक्षा इन्होंने अपनी जान की बाजी लगा देनी चाहिए। परंतु दुर्भाग्य कि जान की बाजी तो इन्होंने लगाई जरूर पर शतरंज की बाजी पर थोडी देर बाद खेल की बाजी में ये दोनों मित्र उलझ पडे। बात खानदान और रईसी तक आ पहुँची। गाली - गलोज होने लगी। दोनों कटार और तलवार रखते थे। दोनो ने तलवार निकाली और एक दूसरे को दे मारी। दोनो का अंत हो गया। काश : यह मौत नवाब वाजिदअली के पक्ष में और ब्रिटिश सेना के प्रतिपक्ष में हुई होती। लेकिन ऐसा हुआ नहीं।

एक जमाने में कहा जाता ~~है~~ था कि जिसको ना दे मौला उसको दे सुराजुद्दौला, सुराजुद्दौला। अपने समय के दानवीर राजा थे उनके शासनकाल के बाद लखनऊ में मौजूद तमाम मीनार और इमारतें उन्हें की काल में बनी उनका एक शेर भी था " जहाँ में जहाँ तक जगह पाइए इमारतें बनाते चले जाइए " प्रेमचंद्र की "शतरंज के खिलाडी" कहानी वाजिद अली शाह के समयकाल की है। कहानी का मूल भाव दर्शाता है कि किस प्रकार शहर के संरक्षण को नजर अंदाज करते हुए, सियासी सूरमाओं ने अपनी वर्चस्व की लड़ाई शतरंज के लिए लगी रफतार से तबाही की ओर बढते समाज से अधिक तीव्रता के साथ

ESTD JUNE 1964

दोनों बादशाहों ने एक दूसरे की आन ले ली। दोनों का आपसी रिश्ता जहाँ मित्रता को रेखांकित करता है तो वही मूर्खता को भी प्रकट करता है, तो एक और कहानी अंग्रेज शासक उलहौजी की क्रूरता का भी जिक्र करती है।

VIVEKANAND COLLEGE KOLHAPUR (EMPOWERED AUTONOMOUS) ESTD JUNE 1964

Shri Swami Vivekanand Shikshan Sanstha's

VIVEKANAND COLLEGE, KOLHAPUR (EMPOWERED AUTONOMOUS)

2130, E Ward, Tarabai Park, Kolhapur, Maharashtra 416003

Student Marks Entry

Course:B.A.B.A. - SY SEM - III **Session:**NEP 1.0 OCT - NOV 2024

Subject: SAMBHASHAN KLA-1 (VSC01HIN31) - CIE

Min/Max : 4/10

Sr.No.	PRN No	Seat No	Student Name	Marks	Sports Marks
1	2023014014	40932	SHREYA VISHWAS BARALE	10	0
2	2023014317	40936	YASH MANOHAR BHURKE	10	0
3	2023014024	40937	BODAKE SAMARTH SAGAR	10	0
4	2023014075	40961	HALWANKAR PRATHAMESH MARUTI	9	0
5	2023014084	40967	JADHAV SHRIDATTA RAJENDRA	10	0
6	2023014091	40973	KIRTIKA SURESH KADAM	10	0
7	2023014124	40988	KAMBLE TEJAS SUNDAR	10	0
8	2023014126	40989	SIZAN HUSSAIN KAPDI	10	0
9	2023014168	41007	CHAITANYA UMAKANT MACHHALE	10	0
10	2023014174	41013	MALKEKAR KRISH AATISH	10	0
11	2023014203	41023	PARAJI PAYAL SANJAY	10	0
12	2023014256	41043	SATTARMEKAR SAHAD SAMIR	10	0
13	2023014270	41046	SHINDE SIDDHARTH ARJUN	10	0
14	2023014274	41048	PRAJAKTA SAGAR SHINGE	10	0
15		41062	Patil Neha Arvind	10	0
16	2023014121	41064	KAMBLE SURAJ MAHADEV	10	0
17	2023014022	41072	BIRAJADAR MANDIRA VIJAY	10	0

HEAD
DEPARTMENT OF HINDI
VIVEKANAND COLLEGE, KOLHAPUR
(EMPOWERED AUTONOMOUS)

VIVEKANAND COLLEGE KOLHAPUR (Empowered Autonomous) ESTD JUNE 1964

Internal Examiner

Mobile Number

Scanned with OKEN Scanner

॥ ज्ञान, विज्ञान आणि सुसंस्कार यांसाठी शिक्षण प्रसार ॥
– शिक्षणमहर्षी डॉ. बापूजी साळुंखे

Shri Swami Vivekanand Shikshan Sanstha Kolhapur's

43297

VIVEKANAND COLLEGE, KOLHAPUR (AUTONOMOUS)

SUPPLIMENT

10/10

Signature of Supervisor	
Subject : हिंदी कहानी और सिनेमा 1st सेम (Minor)	
Test / Tutorial No. :	
Div. :	

Suppliment No. :
Roll No. : 41932
Class : B.A - SY

Shreya Vishwas Barale

* संभाषण के विविध रूप
उद्देश्य
प्रस्तावना
पाठपरिचय

* संभाषण अर्थ एवं स्वरूप

संस्कृत के भाष धातु मे ल्युट प्रत्यय (अन) लगाने से भाषण शब्द की व्युत्पत्ति होती है। इससे पहले सम उपसर्ग जोडने से संभाषण शब्द बनता है। संभाषण का सामान्य अर्थ है - बातचीत अथवा वार्तालाप। सम उपसर्ग के साथ-साथ अव्यय भी है। इसका अर्थ है समान, तुल्य बराबर और सारा। संभाष में ल्युट प्रत्यय (अन) ~~जोडने से संभाषण~~ जोडने से इसका अर्थ अभिवादन, कथन और वार्तालाप भी होता है वार्तालाप के अंतर्गत अनुभाषण, आलाप, भाषण, उक्ति; कथोपकथन, गुफ्तगू, चर्चा, बतकही, वार्ता, संलाप, संवाद और संभाषण शामिल है। अर्थात समान भाषण ही संभाषण है। कहने का अर्थ है कि वक्ता और श्रोता के बीच संदेशों का आदान-प्रदान समान रूप से होना चाहिए। इसे निम्नलिखित आरेख के माध्यम से भी समझा जा सकता है - वक्ता ----- संदेश ----- श्रोता
संभाषण में व्यक्ती कि रुची और स्वभाव का ध्यान रखना पड़ता है। व्यक्तिगत संभाषण मे दूसरे की बात सुनने समझने और बोलने

प्रक्रिया कार्य करती है। प्रभावी और स्पष्ट कथन कथा वक्ता-श्रोता का प्रत्यक्ष संवाद संभाषण की प्रमुख कसौटियाँ है।

* संभाषण विविध रूप

आप जान ही चुके हैं कि संभाषण में वक्ता और श्रोता के बीच संदेशों का आदान-प्रदान समान रूप से होना चाहिए। वार्तालाप या संवाद, व्याख्यान, वाद-विवाद, एकालाप, परिचर्चा और जनसंचार आदि संभाषण के विविध रूप है।

* वार्तालाप या संवाद

वार्तालाप का अर्थ है - बातचीत। दो व्यक्ति जब भाषा के माध्यम से विचारों या सूचनाओं का आदान-प्रदान करते हैं, तो इसे वार्तालाप अथवा संवाद कहा जाता है। व्यक्ति सुबह से लेकर रात को सोने तक कई तरह के संवादों से गुजरता है। दैनिक जीवन में संवाद या वार्तालाप किसी न किसी रूप में सुबह होते ही शुरू हो जाता है और रात तक चलता ही रहता है। साहित्यिक कृतियों में संवाद को कथोपकथन कहा जाता है। लेकिन यहाँ मानवीय संभाषण में निहित संवाद की चर्चा की जा रही है। मोटे तौर पर संवाद को कथोपकथन कहा जाता है लेकिन यहाँ मानवीय संभाषण मे निहित संवाद की चर्चा की जा रही है। वक्ता-श्रोता की संख्या के आधार पर संवाद व्यक्तिगत एवं समूहगत हो सकता है तथा सामाजिक परिवेश एवं सामाजिक भूमिका के आधार पर औपचारिक और अनौपचारिक हो सकता है।

* व्याख्यान या भाषण

व्याख्यान संभाषण का विशिष्ट रूप है। इसका प्रयोग आमतौर पर किसी विषय की व्याख्या करने के लिए किया जाता है। अपनी भावनाओं को अभिव्यक्त करने के साथ-साथ श्रोताओं को प्रेरित करने की क्षमता व्याख्याता में होनी चाहिए। व्याख्याता अपनी बात को तर्कों के आधार पर श्रोता के समक्ष प्रस्तुत करता है। व्याख्यान मे व्याख्याता कम समय मे अधिक जानकारी प्रस्तुत करने का प्रयास करता है।

VIVEKANAND COLLEGE KOLHAPUR (AUTONOMOUS) ESTD JUNE 1964

Scanned with OKEN Scanner

* वादविवाद

'वाद' वह बातचीत या तर्क है जिसमे कोई सिद्धांत निश्चित हो। सिद्धांत स्थापित करने के लिए शास्त्रार्थ या वाद करते हैं, लेकिन सिद्धांत को न समझने वाले विवाद (उल्टा तर्क) करते है। इस तरह वाद-विवाद शास्त्रार्थ या तत्व निदान चिंतन का दूसरा नाम है। कहने का अर्थ है कि किसी भी विषय के पक्ष और विपक्ष में विचार व्यक्त करने के माध्यम को वाद विवाद या बहस कहा जा सकता है। वाद-विवाद प्रतियोगिताओं का भी आयोजन किया जाता है। यह माना जाता है कि किसी विषय के विभिन्न पक्षों पर बहस-मुबाहसा करके उचित और सटीक निर्णय या सिद्धांत तक पहुँचा जा सकता है। कहा भी गया है - वादे-वादे जायते तत्व बोधः। बहस से तत्व को बोध होता है।

* एकालाप

एकालाप अर्थात एक ही व्यक्ती या पात्र का संभाषण जहां किसी अन्य व्यक्ती से संवाद संभव नहीं होता वहाँ एकालाप जन्म लेता है। इसमें संबोधक और संबोधित एक ही पात्र होता है। विचारों की स्थिरता और गतिशिलता के आधार पर एकालाप को दो प्रकारों में विभाजित किया जा सकता है। एकालाप में प्रारंभ से अंत तक एक ही व्यक्ती अपने मनोभावों और घटनाओं का विवरण प्रस्तुत करता है।

* परिचर्चा

साहित्यिक, सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक, धार्मिक, या सांस्कृतिक किसी भी तथ्य विषय या समस्या पर विस्तृत रूप से की जाने वाली चर्चा को परिचर्चा कहा जा सकता है। परिचर्चा सहज और मैत्रीपूर्ण वातावरण में होनी चाहिए। परिचर्चा के प्रमुख तत्व है - विषय विशेष, विभिन्न मत, सम्यक विचार आकर्षक और आकर्षक प्रस्तुति।

VIVEKANAND COLLEGE KOLHAPUR (Empowered Autonomous) ESTD JUNE 1964

Scanned with OKEN Scanner

* जनसंचार

सूचना तथा विचारों को एक व्यक्ती से दुसरे व्यक्ती तक संप्रेषित करने की कला को संचार कहा जाता है। संचार का सामान्य अर्थ है लोगों का आपस में विचार, ज्ञान, तथा भावनाओं का कुछ संकेतों द्वारा आदान-प्रदान। अंग्रेजी शब्द 'मास कम्युनिकेशन' के पर्याय के रूप में जनसंचार शब्द का प्रयोग किया जाता है।

संचारक तथा प्राप्त कर्ता (प्राप्त करने वाले) की भूमिकाएँ बदलती रहती है। इसे निम्नलिखित आरेख के माध्यम से समझा जा सकता है।

संचारक -----> संदेश -----> माध्यम -----> प्रापक

10

VIVEKANAND COLLEGE KOLHAPUR (Empowered Autonomous) ESTD JUNE 1964

Shri Swami Vivekanand Shikshan Sanstha's

VIVEKANAND COLLEGE, KOLHAPUR (EMPOWERED AUTONOMOUS)

2130, E Ward, Tarabai Park, Kolhapur, Maharashtra 416003

Student Marks Entry

Course: B.A.B.A. - SY SEM - III **Session:** NEP 1.0 OCT - NOV 2024

Subject: MADHYAYUGIN AUR AADHUNIK HINDI KAVITA (DSC01HIN32) - CIE

Min/Max : 4/10

Sr.No.	PRN No	Seat No	Student Name	Marks	Sports Marks
1	2023014014	40932	SHREYA VISHWAS BARALE	10	0
2	2023014317	40936	YASH MANOHAR BHURKE	10	0
3	2023014024	40937	BODAKE SAMARTH SAGAR	10	0
4	2023014075	40961	HALWANKAR PRATHAMESH MARUTI	9	0
5	2023014084	40967	JADHAV SHRIDATTA RAJENDRA	10	0
6	2023014091	40973	KIRTIKA SURESH KADAM	10	0
7	2023014124	40988	KAMBLE TEJAS SUNDAR	10	0
8	2023014126	40989	SIZAN HUSSAIN KAPDI	10	0
9	2023014168	41007	CHAITANYA UMAKANT MACHHALE	10	0
10	2023014174	41013	MALKEKAR KRISH AATISH	10	0
11	2023014203	41023	PARAJI PAYAL SANJAY	10	0
12	2023014256	41043	SATTARMEKAR SAHAD SAMIR	10	0
13	2023014270	41046	SHINDE SIDDHARTH ARJUN	10	0
14	2023014274	41048	PRAJAKTA SAGAR SHINGE	10	0
15		41062	Patil Neha Arvind	10	0
16	2023014121	41064	KAMBLE SURAJ MAHADEV	10	0
17	2023014022	41072	BIRAJADAR MANDIRA VIJAY	10	0

VIVEKANAND COLLEGE KOLHAPUR (Empowered Autonomous) ESTD JUNE 1964

HEAD
DEPARTMENT OF HINDI
VIVEKANAND COLLEGE, KOLHAPUR
(EMPOWERED AUTONOMOUS)

Scanned with OKEN Scanner

② Prajakta Sagar Shinge

|| ज्ञान, विज्ञान आणि सुसंस्कार यासाठी शिक्षण प्रसार ||
– शिक्षणमहर्षी डॉ. बापूजी साळुंखे

विवेकानंद कॉलेज
(अधिकारप्रदत्त स्वायत्त)
कोल्हापूर

10/10 Typed.

VIVEKANAND COLLEGE, KOLHAPUR.
(Empowered Autonomous)

SUPPLIMENT

Jr. Supervisor's Sign. :	
Students Sign. :	
Seat No. :	
Seat No. in words :	
Suppliment No. :	Sub:- Hindi [Major]
B.A. II	18982
Centre	Mahat sir

प्र.क. Q.No. 2

प्रश्न:- 1. बिहारी के काव्य की विशेषताएँ स्पष्ट कीजिए।

1) भक्ति भावना
सतसई के मंगलाचरण के रूप में रचित निम्नलिखित दोहा बिहारी की भक्तिभावना का ज्वलंत उदाहरण है जहाँ कवि भव-बाधा हरने के लिए है 'राधा-नागरि' से विनती करता है-

।। मेरी भव बाधा हरो, राधा नागरि सोइ।
जा तन की झाँई परै, स्याम हरित दुति होइ।।

2) दार्शनिक विचार
यह सच है कि बिहारी किसी विशेष दर्शन की सीमा में बंधना स्वीकार नहीं करते किंतु जब कोई दार्शनिक तथ्य उनके हाथ लग जाता तो वे उसे प्रस्तुत करने में हिचकते नहीं थे। अर्थात दार्शनिक-विवेचन उन्होंने जान-बुझ कर नहीं किया अपितु वे स्वतः काव्य की धारा में सहज भाव से आ गए अनेक रचनाओं में

VIVEKANAND COLLEGE KOLHAPUR ESTD JUNE 1964

Scanned with OKEN Scanner

(2)

02 Section	Q. No.												
	Marks												

प्र. क्र.
Q. No.

उन्होंने ~~आभ-बुझाकर नहीं किया~~ ब्रह्म, माया, जीव एवं जगत के विवाद को सहज ढंग से सुलझाने का प्रयास किया है। एक उदाहरण प्रस्तुत है जिसमें कविवर बिहारी ने भक्तिकाल के कवियों की तरह 'माया' की निंदा करते हुए उसकी तुलना शिकारी के जाल (फंदे) से की है। जिसके वश में पड़कर आत्मा परवश हो जाती है-

"को छुट्यौं इहिं जाल परि कत कुरंग अकुलात।
ज्यों-ज्यों सुरझि भज्यौ चहत, त्यों-त्यौं उरझत जात॥"

3) बाह्याडम्बर का विरोध

किसी भी प्रकार के दिखावेपन से बिहारी को चिढ़ थी। तत्कालीन परिस्थितियों में ढोंग करके भोली-भाली जनता को लूटना या ठगना आम बात थी। इस शैली पर प्रहार करना युग की माँग थी। अतः बिहारी ने अंतःकरण की शुद्धता पर अधिक बल दिया। उनके अनुसार माथे पर तिलक लगाकर माला जपने से जीव का कल्याण संभव नहीं है सच्चे मन से राम का स्मरण कर मन को एकाग्र एवं स्थिर करके अंतर्गत की शुद्धि द्वारा ही 'मानव' मुक्ति का अधिकारी हो सकता है -

॥जप माला छापै तिलक, सरै न एकौ कामु।
मन काँचे नाचै वृथा, साँचे राँचे रामु॥

VIVEKANAND COLLEGE KOLHAPUR (Empowered Autonomous) ESTD JUNE 1964

Scanned with OKEN Scanner

Section	Q. No.													03
	Marks													

प्र. क्र.
Q. No.

4) नीति कथन

नीति, मानव जीवन की सफलता एवं शांति का आधार है। यही कारण है कि बिहारी ने अपने नीतिसंबंधी दोहों में लोक-व्यवहार के आधार पर पर्याप्त शिक्षा दी है। दूसरे शब्दों में हम इन दोहों को "अनुभूति का भंडार" भी कह सकते है।

"नर की अरु नल नीर की, गति एकै करि जोइ।
जेतो नीचा ह्वे चलै ते तौ ऊँचौ होइ।।"

"कोटि जतन कोऊ करौ, परै न प्रकृतिहिं बीच।
नल बल जल ऊँचो चढ़ै, अंत नीच कौ नीच।।"

5) मानवीकरण

कविवर बिहारी ने अलंकार का माध्यम लेकर प्रकृति के अनेक चित्र प्रस्तुत किये हैं। साथही, अमूर्त भावों के मूर्तरूप प्रस्तुत कर हृदयस्पर्शी बनाना मानवीकरण कहलाता है। इसमें कोई संशय नहीं कि बिहारी ने ऐसे अनेक बिंब रहे हैं, जो सहृदय में सूक्ष्म-चेतना का संचार करने में सक्षम है। उदाहरणों के लिए आशा-निराशा के बीच जुझते मनुष्य को स्थिर एवं शांत बनाने में निम्नलिखित दोहा कितना प्रभाव बन पड़ा है -

"इहिं आस अटक्यौ रहत, अलि गुलाब के मूल।
है है फेरि बसंत ऋतु, इन डारन वे फूल।।"

ANAND COLLEGE KOLHAPUR ESTD JUNE 1964

6) प्रकृति-चित्रण :-

04	Section	Q. No.												
		Marks												

प्र. क्र.
Q. No.

प्रकृति-चित्रण की परंपरागत शैली को बिहारी ने अपनाया है। 'ऋतु-वर्णन' उसी का प्रतिफल है, जिसे हमें बिहारी सतसई में देख सकते हैं। प्रकृति का आलंबन एवं उद्दीपन रूप में चित्रण करने में बिहारी की प्रवीणता का अंदाजा निम्नलिखित दोहे से लग जायेगा जिसमें उन्होंने पवन (हवा) का मंद-मंद चलना बताकर, वातावरण को सुरभित कर दिया है-

"रनित भृंग घंटावली, झरत दान मधुनीर।
मंद-मंद आवत चल्यौ, कुंजर कुंज समीर।।

T) शृंगार-चित्रण

यह सर्वविदित है कि रीतिकाल में 'शृंगार' की प्रधानता थी। बिहारी की रचनाओं में वासना-जन्य, हाव-भाव एवं विविध चेष्टाओं का अंकन बड़ी सूक्ष्मता से हुआ है। बिहारी सतसई में शृंगार के संयोग और वियोग दोनों पक्षों का निर्वाह करने में कवि को पूरी सफलता मिली है। 'हाव-भाव' से संबंधित निम्नलिखित दोहा संयोग में 'हाँ-ना' की उलझन और वियोग के 'भ्रम' के बीच राधा को 'बातों-बातों' में रस लेने की कामना से कृष्णा की बाँसुरी छिपाने पर मजबूर करा देता है-

" बतरस-लालच लाल की मुरली धरी लुकाइ।
"सौंह करै भौंहनु हँसै, दैन कहै नटिजाइ।

10

VIVEKANAND COLLEGE KOLHAPUR ESTD JUNE 1964 (Autonomous)

Scanned with OKEN Scanner

Shri Swami Vivekanand Shikshan Sanstha's

VIVEKANAND COLLEGE, KOLHAPUR (EMPOWERED AUTONOMOUS)

2130, E Ward, Tarabai Park, Kolhapur, Maharashtra 416003

Student Marks Entry

Course:B.A.B.A. - SY SEM - III   Session:NEP 1.0 OCT - NOV 2024

Subject: SRUJNATMAK LEKHAN-1 (SEC01HIN31) - CIE

Min/Max : 4/10

Sr.No.	PRN No	Seat No	Student Name	Marks	Sports Marks
1	2023014014	40932	SHREYA VISHWAS BARALE	10	0
2	2023014317	40936	YASH MANOHAR BHURKE	10	0
3	2023014024	40937	BODAKE SAMARTH SAGAR	10	0
4	2023014075	40961	HALWANKAR PRATHAMESH MARUTI	9	0
5	2023014084	40967	JADHAV SHRIDATTA RAJENDRA	10	0
6	2023014091	40973	KIRTIKA SURESH KADAM	10	0
7	2023014124	40988	KAMBLE TEJAS SUNDAR	10	0
8	2023014126	40989	SIZAN HUSSAIN KAPDI	10	0
9	2023014168	41007	CHAITANYA UMAKANT MACHHALE	10	0
10	2023014174	41013	MALKEKAR KRISH AATISH	10	0
11	2023014203	41023	PARAJI PAYAL SANJAY	10	0
12	2023014256	41043	SATTARMEKAR SAHAD SAMIR	10	0
13	2023014270	41046	SHINDE SIDDHARTH ARJUN	10	0
14	2023014274	41048	PRAJAKTA SAGAR SHINGE	10	0
15		41062	Patil Neha Arvind	10	0
16	2023014121	41064	KAMBLE SURAJ MAHADEV	10	0
17	2023014022	41072	BIRAJADAR MANDIRA VIJAY	10	0

HEAD
DEPARTMENT OF HINDI
VIVEKANAND COLLEGE, KOLHAPUR
(EMPOWERED AUTONOMOUS)

VIVEKANAND COLLEGE KOLHAPUR (Empowered Autonomous) ESTD JUNE 1964

Scanned with OKEN Scanner

|| ज्ञान, विज्ञान आणि सुसंस्कार यासाठी शिक्षण प्रसार ||

– शिक्षणमहर्षी डॉ. बापूजी साळुंखे

(अधिकारप्रदत्त स्वायत्त)
कोल्हापूर

10/10

VIVEKANAND COLLEGE, KOLHAPUR.

(Empowered Autonomous)

Jr. Supervisor's Sign. :	
Students Sign. :	
Seat No. :	
Seat No. in words :	
Suppliment No. :	
	47786
Centre	

SUPPLIMENT

Kritika Suresh Kadam (SEC) Hindi

प्र. क्र.
Q. No.

कहानी लेखन के सूत्रों का परिचय दीजिए।

1) संवेदना की खोज और उसकी प्रामाणिकता:

एक अच्छी कहानी लिखने के लिए आवश्यक है की लेखक अपने मन को टटोले कि उसके पास कोई संवेदना है या नहीं। धनंजय वर्मा के शब्दों में जीवनगत, प्रभाव, प्रक्रियाएँ, वैचारिक उद्वेलन और संवेदन कहानी का कथ्य मात्र है। 'संवेदना' कुछ सूक्ष्म शब्द है। इसे कथानक अथवा गद्यात्मक रूप देने के लिए उद्देश्य, प्रयोजन, 'मुख्य विचार' अथवा 'थीम' कहा जाता सकता है लेकिन आजकल कहानियों में थीम उपदेश का पर्याय किसी रूप में नहीं हो सकती है। आजकल कहानी में संवेदना की प्रामाणिकता पर अधिक बल दिया जाता है। अतः कहानी-लेखक के लिए आवश्यक है कि वह बार-बार अपने आप से पूछे, कि क्या उसकी संवेदना है? जो कुछ वह कह रहा है। वह उसके जीवन का परखा हुआ सत्य है या मात्र उसका भ्रम अथवा उसके समाज का आदर्श।

2) आकर्षण और कौतूहल:

धनंजय वर्मा के शब्दों में 'कहानी का आदिम राग कौतूहल है' 'आगे क्या हुआ' और 'उसके बाद फिर' के बिना कहानी आगे बढ़ ही नहीं सकती... आज की कहानी की एक अच्छी कहानी की पहली पहचान उसकी पठनीयता और श्रवणीयता है (...) आकर्षण और आस्वाद्य कहानी के मूल और आदिम तत्व है।

VIVEKANAND COLLEGE KOLHAPUR ESTD JUNE 1964

02	Section	Q. No.											
		Marks											

प्र. क्र.
Q. No.

कहानी के कथानक में, उसकी संवेदना में यह कौतूहल आकर्षण और जिज्ञासा तत्व अवश्य रहने चाहिए। यह आकर्षण पाठक को आद्योपांत बाँधे रखता है, उसे दत्तचित्त और एकाग्र बनाए रखता है।

3) पात्र व चरित्र-चित्रण

कहानी में पात्रों का भी विशिष्ट महत्व है। कथा होगी पात्र भी होंगे ही। लेकिन जिस प्रकार छोटे घर में बहुत सारे अभ्यागत आमंत्रित नहीं किए जा सकते, उसी प्रकार कहानी में चरित्र प्रमाणिक हो। पात्रों के गुण-दोष, स्वभाव, व्यवहार, रूप, रंग, आकार आदि सभी बातें चरित्र-चित्रण के अंतर्गत हैं और ~~इ~~ इन विषयों पर जो भी कहानी प्रकाश डालती है वही अधिक प्रभावशाली होती है। चरित्र-चित्रण के लिए जिन पात्रों को चुना गया है उनके व्यक्तित्व की पूरी छाप कहानी-लेखक के ~~मस्तिष्क~~ मस्तिष्क पर होनी चाहिए और उसी प्रकार की छाप पाठक पर भी लगनी चाहिए।

(अधिकारप्रदत्त स्वायत्त)
कोल्हापूर

4) परिवेश

कहानी में परिवेश से तात्पर्य केवल बाह्य जीवन-जगत का विवरण भर नहीं है बल्कि जीवन-स्थितियों और समय के यथार्थ के साथ उन प्रभावों से है जिनसे कहानी की घटना और कार्यव्यापार रूपायित होते हैं। इससे चरित्रों का मनोविज्ञान और कहानी की घटना और कार्यव्यापार केंद्रीय अनुभूति निर्धारित होती है। कथा के विकास, पात्रों की गतिविधियों, कहानीकार की दृष्टि और संवेदना, व्यक्त होने वाले अनुभव और चेतना पर परिवेश का निर्णायक प्रभाव होता है। देश और समाज, युग और काल दोनों की कहानी का वस्तु-बिम्ब रूपायित करता है।

VIVEKANAND COLLEGE KOLHAPUR (Empowered Autonomous) ESTD JUNE 1964

Q. No.													03
Marks													

5) वर्णन और संवाद.

वर्णन और संवाद - ये वे दो उपकरण है जिनके द्वारा कहानी का विकास होता है। ये दोनों अकेले या सम्मिलित होकर कहानी की संवेदना, कथानक और चरित्र-चित्रण को प्रकट कर सकते है। वर्णन कहीं पर घटना की पृष्ठभूमि तैयार करता है, कहीं चरित्र का विश्लेषण करता है और कहीं स्वंय घटना को ही प्रस्तुत करता है।

6) भाषा और शैली

कहानी- लेखक को पात्रों के अनुकूल और अपनी रूचि के अनुसार भाषा का प्रयोग करना चाहिए। जो कथानक और चरित्र चित्रण को वर्णन और संवाद द्वारा व्यक्त कर सके। कहानी की भाषा जितनी यथार्थ और बोल-चाल की भाषा के निकट होगी, कहानी उतनी ही प्रौढ और सफल होगी। नए लेखक प्रायः अपनी साहित्यिकता की प्रतिष्ठा के लिए कल्पना प्रधान, संस्कृतनिष्ठ, शब्दावली तथा ऐसे ही अनावश्यक प्राकृतिक दृश्यों के चित्रण की बैसाखी स्वीकार कर लेते है लेकिन ऐसी भाषा तथा चित्रण कहानी को सर्वथा अस्वाभाविक, अयथार्थ और प्रभावहीन बना देते हैं।

7) प्रतीक-संकेत योजना।

आज कहानी का स्वरूप सरल न होकर जटिल हो गया है। मानव मन के द्वंद्वों को परत-दर-परत खोलना कहानी का साध्य बनता जा रहा है। यही कारण है कि कहानी में सपाट विवरण और स्थितियों या अनुभवों के सीधे वर्णन की प्रवृत्ति कम हुई है और प्रतीकों तथा संकेतों से कथ्य को प्रभावकारी बनाने की प्रवृत्ति बढ़ है। कहानी स्वंय भी किसी-न-किसी मानव स्थिति और अनुभूति का प्रतीक और संकेत होती है।

VIVEKANAND COLLEGE KOLHAPUR (Empowered Autonomous) ESTD JUNE 1964

Scanned with OKEN Scanner

04	Section	Marks												

प्र. क्र. Q. No.

8) आकार

कई बार देखा गया है कि नए लेखक लंबी कथाओं की ओर अधिक आकर्षित होते हैं जिनमें एक व्यक्ति की संपूर्ण जीवनकाल ही नहीं, उसकी कई पीढ़ियों की कथा कहने का प्रयत्न किया जाता है लेकिन इतने लंबे कथानक कहानी विधा के लिए अत्यंत अनुपयुक्त होते है। संवेदना की एकता की दृष्टि से एक छोटी घटना ही अधिक उपयुक्त होती है।

9). प्रस्तुति:

कहानी का प्रभाव कहानी की प्रस्तुति पर निर्भर करता है। कहानी कहने का ढंग, अभिव्यक्ति की पद्धति और पूरी कथन भंगिमा कैसी हो? यह कहानी के कथ्य और वस्तु पर निर्भर करता है। डॉ. धनंजय वर्मा ने कहानीकार की स्थिति के आधार पर इसके रूप परिकल्पित किए हैं, जो इस प्रकार है -

(क) तटस्थ दर्शक:

कहानीकार कहानी को जब इस तरह प्रस्तुत करता है मानो वह पूरे घटनाक्रम और स्थिति - विन्यास का तटस्थ दर्शक है तब वह केवल वर्णन करता है।

(ख) सक्रिय सहभागी:

इस प्रस्तुति में कहानीकार कहानी के घटना चक्र, स्थिति - विन्यास और अनुभव - क्रम को इस तरह प्रस्तुत करता है मानो वह सब उसके साथ ही घटा है। वह स्वयं उन स्थितियों से गुजरा है और यह सब उसका ही अपना अनुभव है। वह ~~स्वयं~~ उस कहानी को आपबीती या आत्मकथा की तरह प्रस्तुत करता है। इस प्रस्तुति में डायरी और पत्र शैली भी अपनाई जाती है।

VIVEKANAND COLLEGE KOLHAPUR (Empowered Autonomous) ESTD JUNE 1964

Scanned with OKEN Scanner

विवेकानंद कॉलेज कोल्हापूर

ग) नेपथ्यवासी:-

इस प्रस्तुति में कहानीकार एक सूत्रधार की तरह होता है। यह न तो दर्शक और न ही सहभागी के रूप में दृश्य पर आता है। वह तो नेपथ्य से ही कहानी के सूत्र संचालित करता है। जीवन के मंच पर चरित्र अपना अभिनय करते हैं।

प्रभावान्विति:-

प्रभाव कहानी की श्रेष्ठता और उसकी रचनात्मक समृद्धि का सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण बिंदु है। कहानी का आकार और आकर्षण उसकी प्रामाणिकता और प्रस्तुति सब मिलकर कहानी के प्रभाव को एकान्वित और एकाग्र करते हैं। कहानी के घटना-क्रम, स्थिति-विन्यास पात्र व चरित्रांकन, कार्यव्यापार, रूप-विधान, संवाद और भाषा शैली की सार्थकता उनके एकीकृत प्रभाव में ही है तभी कहानी अपने लक्ष्य और उद्देश्य को प्राप्त कर पाने की में सफल हो पाती है।

मस्तिष्क में संवेदना के परिपक्व हो जाने पर उसे एक ही बैठक में लिख डालना आवश्यक है। क्योंकि बैठकों में लिखने और दो बैठकों के बीच अंतराल के बढ़ जाने से संवेदना क्षीण होने लगती है और उसका स्वरूप लेखक की पकड़ से निकल जाता है। कहानी लिखने के बाद उसका पुनरावलोकन आवश्यक है।

शीर्षक और आदि-अंत:-

~~इस~~ कहानी का शीर्षक प्राथमिक महत्त्व होता है। वह इतना सांकेतिक और व्यंजक होना चाहिए कि कहानी के कथ्य और अनुभव, घटना और स्थिति को अनायास व्यक्त कर दे। इसी प्रकार कहानी का आदि और अंत भी महत्त्वपूर्ण है। कहानी का अंत इतना प्रभावशाली हो की पाठक के मन मस्तिष्क में देर तक उसका असर व्याप्त रहे तभी कहानी सफल हो पाती है। वास्तव में कहानी उस घुड़दौड़ की तरह है जिसमें आदि और अंत ही देखा जाता है।

VIVEKANAND COLLEGE KOLHAPUR ESTD JUNE 1964

Scanned with OKEN Scanner

Shri Swami Vivekanand Shikshan Sanstha's

VIVEKANAND COLLEGE, KOLHAPUR (EMPOWERED AUTONOMOUS)

2130, E Ward, Tarabai Park, Kolhapur, Maharashtra 416003

Student Marks Entry

Course:B.A.B.A. - TY SEM - V

Session:OCT - NOV 2024

Subject: HINDI-VII (DSE - 1016E1) - CIE

Min/Max : 6/15

Sr.No.	PRN No	Seat No	Student Name	Marks	Sports Marks
1	2022014008	48231	Sanika anil bankar	14	0
2	2022014017	48238	Omkar Eknath Bhosale	15	0
3	2022014094	48276	shweta Sanjay kalugade	15	0
4	2022014267	48278	Ashwat Parappa Kamble	14	0
5	2022014107	48280	Pruthviraj Sachin Kamble	14	0
6	2022014120	48287	Prachi Tatyaso Karpe	15	0
7	2022014127	48291	Sanika Ramesh Khandekar	15	0
8	2022014161	48317	MITAKE VANDANA LAXMAN	15	0
9	2021014699	48320	MULLA AMAN MUBARAK	15	0
10	2022014170	48321	NADAF MOIZE AJAJ	15	0
11	2022014187	48329	Saifali Firoj Patel	15	0
12	2022014228	48347	SATPUTE PRANAV UMAJI	15	0
13	2022014235	48352	SHINDE OM LAXMAN	15	0
14	2022014246	48355	Anuradha prakash thakare	15	0
15	2022014266	48362	Rasika dattatray zugar	15	0
16	2020014609	48375	KAMBLE HARSHAD AAKARAM	14	0

VIVEKANAND COLLEGE KOLHAPUR (Empowered Autonomous) ESTD JUNE 1964

HEAD
DEPARTMENT OF HINDI
VIVEKANAND COLLEGE, KOLHAPUR
(EMPOWERED AUTONOMOUS)

Internal Examiner

Mobile Number

Scanned with OKEN Scanner

॥ ज्ञान, विज्ञान आणि सुसंस्कार यांसाठी शिक्षण प्रसार ॥
– शिक्षणमहर्षी डॉ. बापूजी साळुंखे

Shri Swami Vivekanand Shikshan Sanstha Kolhapur's

43329

VIVEKANAND COLLEGE, KOLHAPUR (AUTONOMOUS)

SUPPLIMENT

Signature of Supervisor	15/15

Suppliment No. : Vandana Laxman Mitake
Roll No. : 4864
Class : BA-III

Subject : Hindi VII
Test / Tutorial No. : Kepel.
Div. :

* उदय प्रकाश का जीवन परिचय दिजिए।

हिंदी के प्रख्यात कवि कथाकार, पत्रकार और फिल्मकार उदय प्रकाश का जन्म 1 जनवरी, 1952 मे मध्यप्रदेश जिले के सीतापुर गाँव में हुआ था। सीतापुर गाँव छत्तीसगढ जिले का सीमावर्ती गाँव मे जिसमे आदीवासी जनसंख्या बहुता सी पाई जाती है यहाँ 52% बस्ती आदिवासीयों की है और अत्याधिक गरीबी है। सीतापुर शहडोल जिले में आया हुआ है। आजकल इस जनपद का नया नाम अनूपपुर हो गया है यह इलाक छोटा नागपुर इलाके तक है। उदय प्रकाश का जन्म मध्यवर्गीय परिवेश में हुआ था जब वे 12 साल के थे तब उनकी माता गंगादेवी की कॅन्सर से मृत्यू हो गयी। माँ की मृत्यू का गहरा असर उनके पिता प्रेमकुमार सिंह पर हुआ और वे शराब पीने लगे। इसी कारण सन 1969 मे उन्हे भी कॅन्सर हुआ। पीता की मृत्यू के बाद उदय जी ने सागर विश्वविदयालय मे दाखिला प्राप्त कियाँ। विदयार्थी जीवन में वे साम्यवादी विदयार्थी संगठन से जुड गए। उस समय उनकी उम्र सोलह की थी। उदय जी ने विज्ञान मे स्नातक और हिंदी विषय में स्नातकोत्तर डिग्री प्राप्त की 1975 के बाद वे दिल्ली चले गए। उदय जी ने जे.एन.यु. विश्वविदयालय और इसके मणिपुर केंद्र मे चार वर्ष तक अध्यापन का काम किया। उसके बाद

विभाग, मध्यप्रदेश में लगभग दो वर्ष विशेष कर्तव्य अधिकारी के रूप में कार्य किया। पूर्वग्रह का सहायक संपादन के साथ नौ वर्ष तक टाइम ऑफ इंडिया के समाचार पाक्षिक 'दिनमान' के संपादकीय विभाग में नौकरी की। लगभग दो वर्ष तक पी.टी.आई (टेलीविजन) और एक वर्ष इंडिपेंट टेलीविजन के विचार और पटकथा प्रमुख के रूप में काम किया कुछ समय संडे मेल वरिष्ठ सहायक संपादक रहे। अब इन दिनों स्वतंत्र लेखन और प्रेम मीडिया के लिए लेखन कर रहे हैं।

उदय प्रकाश का विवाह 9 जुलाई 1977 ई. को गोरखपुर निवासी कुमकुम सिंह के साथ हुआ उनकी पत्नी ने जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय से फ्रेंच भाषा व स्पेनिश भाषा में एम.ए के साथ इंडोनेशिया भाषा में डिप्लोमा किया था। कुमकुम जी दिल्ली से ही एक विद्यालय में कार्यरत है। उन्होंने उदय प्रकाश के साथ जीवन के सुख-दुःख में सदैव साथ निभाया है। उदय प्रकाश के दो पुत्र सिद्धार्थ और शंतनु उच्च पदों पर कार्यरत हैं। सिद्धार्थ ने फ्रांसीसी लड़की से शादी कर छात्रवृत्ति प्राप्त कर जर्मन में कार्यरत है। उनका छोटा बेटा शंतनु बैंक में कार्यरत है।

2. उदय प्रकाश व्यक्तित्व, उदय प्रकाश जी का बाह्य व्यक्तित्व बहुत ही आकर्षक है। गोरा वर्ण, मजबूत देहयष्टि, उन्नत माथा, बड़ी-बड़ी आँखे, तीखी नाक-नक्श और आँखों पर हमेशा चष्मा पहनते है। उनकी आवाज बुलंद है। और जिंदादिल व्यक्ती के रूप में वे मित्रों में पहचाने जाते हैं। सिर पर टोपी, सूट पहनना अच्छा लगता है। हिंदी साहित्य जगत में उदय प्रकाश एक ईमानदार, संवेदनशील, मैत्री निर्वाहक, मानवीय सामाजिक चिंताओं को प्रकट करनेवाले साहित्यकार है। उदय प्रकाश जी के लेखन का प्रारंभ गाँव से हुआ है। इसकारण उन्हें गाँव का परिवेश और पारिवारिक माहौल बहुत अच्छा लगता है। समकालीन, बुराइयाँ, घूसखोरी, चापलूसी, गुटबाजीता, सत्ता के दलालों को आडे हाथों लेते

वे नीडर होकर कबीर की तरह फकीरी मानसिकता को लेकर काम करते है। उनके बचपन का पारिवारिक एवं आर्थिक संघर्ष उनकी कविता और कहानी साहित्य में झलकता है। उदय प्रकाश एक पढाकू लेखक है उनमें रोमानी प्रखरता है, वह असामान्य का सामान्य द्रष्टा है और बेहद ईमानदार है। बचपन में माता-पिता की असमय मृत्यू के कारण अकेले पडे हुए उदय प्रकाश बौद्ध दर्शन और लामाओं की ओर आकर्षित हुए थे। साथ ही उनपर डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर और महात्मा जोतिबा फुले के सामाजिक एवं शैक्षिक विचारों का गहरा प्रभाव रहा है। उन्होंने अपने विद्यार्थी जीवन में बाइबल गीता इन धर्मग्रंथों का अध्ययन किया था। जिससे उन्हे प्रेरणा मिली थी। वे महात्मा गांधी और उनके दर्शन पर विश्वास रखते हैं। उदय प्रकाश पर केदारनाथ सिंह रघुवीर सहाय, विष्णु खरे, धर्मवीर भारती, संजय चतुर्वेदी आदि के कविताओं का प्रभाव है। उनका पूरा साहित्य पढने पर पता चलता है कि कबीर, मुक्तिबोध, नागार्जुन, निराला रेणू, श्रीलाल शुक्ल आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी, धूमिल आदि का विशेष प्रभाव है।

• उदय प्रकाश कृतित्व, हिंदी साहित्यजगत में उदय प्रकाश साहित्य प्रतिबद्धता के लिए समर्पित रचनाकार के रूप में पहचाने जाते हैं। कहानीकार उदय प्रकाश जी का साहित्य संसार व्यापक है। उनके लेखन की शुरुवात कविताओं से की है। माता-पिता दोनों में साहित्यिक अभिरुची थी। इसकारण उनके घर पर विभिन्न साहित्यिक पत्रिकाएं आती थी। बुआ आल्हा गीत एवं भजन गाती थी इसकारण बचपन में ही उदय जी पर लेखन के संस्कार हुए थे। अपने आस-पास के परिवेश एवं उसकी घटनाओं का वे बहुत ही संवेदनशीलता से निरीक्षण करते हैं। इससे प्राप्त हुए अनुभवों को वे अपनी विविध रचनाओं के माध्यम से अद्भुत प्रतिभा के साथ पाठकों के सामने साकार करते हैं।

VIVEKANAND COLLEGE KOLHAPUR (Autonomous) ESTD JUNE 1964

Scanned with OKEN Scanner

Shri Swami Vivekanand Shikshan Sanstha's

VIVEKANAND COLLEGE, KOLHAPUR (EMPOWERED AUTONOMOUS)

2130, E Ward, Tarabai Park, Kolhapur, Maharashtra 416003

Student Marks Entry

Course:B.A.B.A. - TY SEM - V

Session:OCT - NOV 2024

Subject: HINDI- VIII (DSE - 1016E2) - CIE

Min/Max : 6/15

Sr.No.	PRN No	Seat No	Student Name	Marks	Sports Marks
1	2022014008	48231	Sanika anil bankar	14	0
2	2022014017	48238	Omkar Eknath Bhosale	15	0
3	2022014094	48276	shweta Sanjay kalugade	15	0
4	2022014267	48278	Ashwat Parappa Kamble	14	0
5	2022014107	48280	Pruthviraj Sachin Kamble	14	0
6	2022014120	48287	Prachi Tatyaso Karpe	15	0
7	2022014127	48291	Sanika Ramesh Khandekar	15	0
8	2022014161	48317	MITAKE VANDANA LAXMAN	15	0
9	2021014699	48320	MULLA AMAN MUBARAK	15	0
10	2022014170	48321	NADAF MOIZE AJAJ	15	0
11	2022014187	48329	Saifali Firoj Patel	15	0
12	2022014228	48347	SATPUTE PRANAV UMAJI	15	0
13	2022014235	48352	SHINDE OM LAXMAN	15	0
14	2022014246	48355	Anuradha prakash thakare	15	0
15	2022014266	48362	Rasika dattatray zugar	15	0
16	2020014609	48375	KAMBLE HARSHAD AAKARAM	14	0

VIVEKANAND COLLEGE KOLHAPUR (Empowered Autonomous) ESTD JUNE 1964

HEAD
DEPARTMENT OF HINDI
VIVEKANAND COLLEGE, KOLHAPUR
(EMPOWERED AUTONOMOUS)

Scanned with OKEN Scanner

॥ ज्ञान, विज्ञान आणि सुसंस्कार यांसाठी शिक्षण प्रसार ॥
- शिक्षणमहर्षी डॉ. बापूजी साळुंखे

Shri Swami Vivekanand Shikshan Sanstha Kolhapur's

43330

VIVEKANAND COLLEGE, KOLHAPUR (AUTONOMOUS)

SUPPLIMENT

Signature of Supervisor: 15/15

Suppliment No. : Vandana Laxman Mitake
Roll No. : 4866
Class : BA-III

Subject : Hindi VIII
Test / Tutorial No. : Tuto
Div. :

अलंकार की परिभाषा स्पष्ट करते हुए उनके भेदों पर सोदाहरण प्रकाश डालिए।

अलंकार शब्द में अलम उप पद है, जो कृ धातु से संज्ञा में अथवा करण के अर्थ में घत्र प्रत्यय होकर निर्मित हुआ है। अलम शब्द का अर्थ है भूषण। अतः अलंकार का व्युत्पतिमूलक है - जो भूषित सुशोभित करे वह अलंकार है। भूषित करनेवाला अर्थात जो अलंकृत करे वह अलंकार है। जिस प्रकार अलंकारो को धारण करने पर नारी के रूप सौंदर्य में वृद्धी होती है, उसी प्रकार अलंकार से कविता प्रभावी सरस और सुंदर बनती है। जिस तरह सुंदर वस्तु, व्यक्ति स्थान, अक्षर, चित्र, नृत्य तथा भाषण आदि मनुष्य का ध्यान आकर्षित करते है। और अपना प्रभाव मनुष्य के मानस पटल पर छोड़ते है। उसी तरह किसी काव्य में उच्च कोटि के भाव, विचार, कल्पना तत्व के साथ उसका कला पक्ष भी मजबूत हो, तो वह काव्य अधिक प्रभावात्मक और सफलता प्राप्त करता है। आभूषण पहनने पर स्त्री या पुरुष का सौंदर्य अधिक खुलकर सामने आता है, उसी तरह अलंकार के कारण काव्य में अभिव्यक्त भाव, विचार, कल्पना, खुलकर चमत्कृत, प्रभावी रूप से पाठको के सामने आते है। कवि केशवदास ने अलंकार के संबंध में लिखा है -

Vivekanand College Kolhapur ESTD June 1964 (Empowered Autonomous)

जदपि सुजाति सुलच्छनी सुबरन सरस सुवृत्त
भूषण बिनु न बिराजई कविता, वनिता मित्त ।।

अर्थात उच्च कुल एवं जाति में जन्मी, सुस्वभाव की, सौंदर्यवान तथा अच्छे लक्षणोंवाली स्त्री का सौंदर्य भूषण पहनने से अधिक बढ़ता है। उसी तरह भूषण के बिना कविता केशवदास ने अलंकार के संबंध में लिखा की कविता भूषण के बिना शोभती नहीं है।

अतः भारतीय साहित्यशास्त्र में अलंकार का स्थान अक्षुण्ण है। एक कवि, लेखक के लिए जितना महत्त्व अलंकार का है, उतना ही पाठक तथा श्रोता के आनंद की दृष्टि से भी अलंकारयुक्त उक्ति का महत्त्व है। वस्तुतः अलंकार के बिना के कारण कविता कामिनी सुसज्जित होती है। मात्र एक बात का अवश्य ध्यान में रखनी चाहिए की जिस तरह किसी भी बात की अति अप्रभावात्मक होती है। उसी तरह अलंकारों का अति प्रयोग भी कविता को बोझील बनाता है। इस संदर्भ में कवि बिहारी ने लिखा है - सुधो पाय न धरि सके सोभा ही के भार' इस दृष्टि से रचनाकार या कवि अलंकारो का प्रयोग करता है। तो संबोधित कविता का कला पक्ष संतुलीत बनता है और कविता का आशय प्रभावात्मक रूप से पाठक तथा श्रोता तक पहुँचने में सहायता मिलती है।

अलंकार परिभाषाएँ :-

अलंकार को परिभाषित करने का प्रयास विभिन्न विद्वानों ने किया है। अलंकारवादी वामन ने सौंदर्यकार कहकर अलंकार को सौंदर्य का पर्यायवाची माना है। भामह के पूर्व अलंकार शब्द काव्य के अंतर्गत और बाह्य दोनों रूपों के अलंकृत करनेवाले उपादानों के लिए प्रयुक्त होता था। बाद में आचार्यों में मतभेद होने पर अलंकार का व्यापक अर्थ संकुचित हुआ। यहां चुनिंदा विद्वानों ने अलंकार की जो परिभाषाएँ वह इस प्रकार है -

1) आ. भामह - वक्राभिधेयशब्दोक्तिरिष्टावाचामलंकृतिः
अर्थात - शब्द और अर्थ का वैचित्र्यही अलंकार है।

VIVEKANAND COLLEGE KOLHAPUR ESTD JUNE 1964 (Empowered Autonomous)

Scanned with OKEN Scanner

२. आ. दण्डी - काव्यशोभाकरान् धर्मान् अलंकारान् प्रचक्षते
अर्थात - अलंकार काव्य को सौंदर्य प्रदान करनेवाले धर्म है।
३. आ. वामन - काव्यं ग्राह्यमलंकारात् सौंदर्यमलंकार
अर्थात - अलंकार द्वारा ही काव्य ग्राह्य होता है और सौंदर्य ही अलंकार है।
४. आ. विश्वनाथ -
शब्दार्थयोरस्थिरा ये धर्माः शोभातिशायिनः
रसादीनुपकुर्वन्तोऽलंकारास्तेऽङ्गदादिवत् ॥"
अर्थात अलंकार काव्य शोभा को बढानेवाले रस, भाव आदि के उत्कर्ष में सहायक शब्द और अर्थ के अस्थिर धर्म है। अंगद आदि आभूषणों के समान ही ये अस्थिर धर्म भी काव्य के आभूषण या अलंकार कहलाते हैं।
५. आ. रामचंद्र शुक्ल -
भावों का उत्कर्ष दिखाने और वस्तुओं के रूप, गुण और क्रिया का अधिक तीव्र अनुभव करने में कभी-कभी सहायक होनेवाली उक्ति अलंकार है।
अंतः विद्वानों ने अलंकार को कवि की वाणी को सौंदर्य प्रदान करनेवाले माने जाते है। भारतीय काव्यशास्त्र में अलंकारवादी आचार्यों की सुदीर्घ परंपरा रही है। परिभाषित करते समय अलंकार को केवल काव्य का बाह्य रूप तत्व ही नहीं माना। बल्कि यह स्वीकारा है कि रस, गुण, आदि काव्य की अंतरात्मा को पुष्ट करनेवाले सभी तथ्यों का विकास अलंकार के द्वारा होता है। वे अलंकार को काव्य का स्थिर धर्म मानते हैं। भारतीय आचार्यों ने अलंकार में वैचित्र्य एव सौंदर्य दृष्टि को अधिक महत्व दिया है।

15

VIVEKANAND COLLEGE KOLHAPUR (Empowered Autonomous) ESTD JUNE 1964

Scanned with OKEN Scanner

Shri Swami Vivekanand Shikshan Sanstha's

VIVEKANAND COLLEGE, KOLHAPUR (EMPOWERED AUTONOMOUS)

2130, E Ward, Tarabai Park, Kolhapur, Maharashtra 416003

Student Marks Entry

Course:B.A.B.A. - TY SEM - V

Session:OCT - NOV 2024

Subject: HINDI-IX (DSE - 1016E3) - CIE

Min/Max : 6/15

Sr.No.	PRN No	Seat No	Student Name	Marks	Sports Marks
1	2022014008	48231	Sanika anil bankar	14	0
2	2022014017	48238	Omkar Eknath Bhosale	15	0
3	2022014094	48276	shweta Sanjay kalugade	15	0
4	2022014267	48278	Ashwat Parappa Kamble	14	0
5	2022014107	48280	Pruthviraj Sachin Kamble	14	0
6	2022014120	48287	Prachi Tatyaso Karpe	15	0
7	2022014127	48291	Sanika Ramesh Khandekar	15	0
8	2022014161	48317	MITAKE VANDANA LAXMAN	15	0
9	2021014699	48320	MULLA AMAN MUBARAK	15	0
10	2022014170	48321	NADAF MOIZE AJAJ	15	0
11	2022014187	48329	Saifali Firoj Patel	15	0
12	2022014228	48347	SATPUTE PRANAV UMAJI	15	0
13	2022014235	48352	SHINDE OM LAXMAN	15	0
14	2022014246	48355	Anuradha prakash thakare	15	0
15	2022014266	48362	Rasika dattatray zugar	15	0
16	2020014609	48375	KAMBLE HARSHAD AAKARAM	14	0

VIVEKANAND COLLEGE KOLHAPUR (Empowered Autonomous) ESTD JUNE 1964

HEAD
DEPARTMENT OF HINDI
VIVEKANAND COLLEGE, KOLHAPUR
(EMPOWERED AUTONOMOUS)

Scanned with OKEN Scanner

|| ज्ञान, विज्ञान आणि सुसंस्कार यांसाठी शिक्षण प्रसार ||
– शिक्षणमहर्षी डॉ. बापूजी साळुंखे

43328

Shri Swami Vivekanand Shikshan Sanstha Kolhapur's

VIVEKANAND COLLEGE, KOLHAPUR (AUTONOMOUS)

SUPPLIMENT

Signature of Supervisor

Suppliment No. : Vandana Laxman Mhake

Roll No. : 4864

Class : BA-III

Subject : Hindi IX

Test / Tutorial No. :

Div. :

15/15

Typed

→ आदिकालीन साहित्य की विशेषताएँ स्पष्ट किजिए।

जिस युग में धर्म और राजनीतिक की दीन-हीन दशा हो, उस युग में उच्च सामाजिकता की आशा नहीं की जा सकती। राजनीतिक की दृष्टी से ~~अव्यव~~ अव्यवस्था तो धर्म के नाम पर अधर्म फैला था। सामान्य जनता युद्धों में पीस रही थी। जनता आर्थिक संकट में थी।

1. जाती-व्यवस्था : इस युग में जाति व्यवस्था के बंधन कठोर बन गये थे। अब जाति गुण और कर्म के आधार पर न होकर वर्ग के आधार पर मानी जाने लगी थी। एक जाति की अनेक उपजातियाँ होने लगी थी। छुआछूत के नियम कड़े होते गये। ब्राह्मण और क्षत्रिय दोनों ही उपजातियों में बंटते चले जा रहे थे। हिंदू जाती की पाचन शक्ति का प्रायः ह्रास हो चुका था। हिन्दूओं को इस बात की इच्छा नहीं होती की जो वस्तु एक बार भ्रष्ट हो गई है उसे शुद्ध करके फिर लें। उस समय रुढिग्रस्त धर्म के समान समाज भी रुढिग्रस्त हो चुका था। राजपूत जाति का अभ्युदय इस काल की महान घटना है। वे 36 कुलों में बंट गये थे। ब्रह्मणों-क्षत्रियों का प्रभाव वैश्य और शुद्रों पर पड़ना अनिवार्य था। अतः वे भी और उपजातियों में विभाजित हो गए। वैश्यों ... त्याग कर वाणिज्य को प्रमुख व्यवसाय बना लिया ... को समाज में विशेषाधिकार प्राप्त नहीं थे।

Scanned with OKEN Scanner

2. रुढिग्रस्त समाज :

आदिकाल के रुढिग्रस्त धर्म के समान समाज भी रुढिग्रस्त हो चुका था। उस युग में सामंती वीरता और वंश-कुलीनता का बोलबाला था। राजपूत जाति वीरता और आत्मोत्सर्ग के लिए प्रसिद्ध थी। राजपूत नारियाँ भी पीछे नहि थी, उस समय जौहर उनके आत्म-बलिदान और शौर्य का प्रतीक था। उस समय स्वयंवर प्रथा एक अन्य सामाजिक विशेषता थी। मुस्लिम आक्रमणों की वजह से बाल्यविवाह और पर्दा पद्धति की प्रथा भी प्रचलित हो गई थी। राजा विलासी एवं बहुपत्नीत्व थे। इसी कारण उनके उत्तराधिकारी भी बहुपत्नीव थे। उस युग का समाज नैतिक मूल्यों से भ्रष्ट हो गया था।

3. राजा, सामंत और सामान्य जनता :

आदिकाल का राजाओं और सामंतो का युग था। उस युग में राजाओं का जीवन विलासमय था। उस युग के ऐश्वर्याभिभूत नृपति वर्ग का अधिकांश समय अन्तःपुर में अपनी महिषियों, उपपत्नियों तथा रक्षिताओं के साथ रंगरलियों में बीतता था। राजा बहुपत्नीक थे। स्वयंवर जैसे धार्मिक कृत्यों पर खून की नदियाँ वह बह जाया करती थी। चारों ओर युद्धों का वातावरण था। सामान्य जनता में मनोबल की कमी थी। हिंदू समाज जन्मगत, स्थानगत, व्यवसायगत सम्प्रदायगत और वंशगत जातियों एवं उपजातियों में बँट गया था। जिससे परस्पर संगठन एवं सहानुभूति का अवसर उत्पन्न नहीं हो पाता था। हर तरफ युद्धों का वातावरण था।

4. नारी के प्रति दृष्टीकोन :

इस युग में नारी की अवस्था बहुत ही बिकट थी। उसके प्रति समाज में उदात्त दृष्टीकोन नहीं था। नारी को सिर्फ भोग का साधन समझा जाता था। उस युग में बाल-विवाह, पर्दापद्धत, तथा सती प्रथा का भी बोलबाला था। नारी को कोई सामाजिक महत्त्व नहीं था। उसे सिर्फ भोग का साधन समझा जाता था। स्त्रि की प्राप्ती के लिए अनेक राजाओं में युद्ध होते थे।

VIVEKANAND COLLEGE KOLHAPUR ESTD JUNE 1964 Empowered Autonomous

Scanned with OKEN Scanner

5. विवाह एवं उत्सव :

उस समय विवाह लगभग सभी करते थे और गृहस्थ आश्रम एक ऐसे मर्यादित आश्रम के रुप में माना जाता था। जिसके द्वारा अर्थ और काम की प्राप्ती हो सकती थी। स्मृतियों में गिनाए गए ब्राह्म, दैव, आर्ष, प्राजापत्य, गांधर्व, असुर, पिशाच और राक्षस ये आठ प्रकार के विवाह सैद्धान्तिक दृष्टी से मान्य थे। किन्तु व्यावहारिक दृष्टी से ब्राम्ह विवाह का अधिक प्रचार था। तो निम्नवर्ण में आसुर विवाह की प्रथा थी। स्वयंवर की प्रथा सिर्फ राजपूतों तक ही सीमित थी। मुस्लिमों के आक्रमण के पश्चात बालविवाह की प्रथा भी रुढ हो गई। उस समय विधवा विवाह का निषेध था।

इस काल में समाज के विभिन्न वर्गों में विविध प्रकार के उत्सवों और वस्त्राभूषणों के प्रति प्रेम प्रचलित था। आखेट मल्ल-युद्ध घुडसवारी, द्यूत-क्रीडा, संगीत, नृत्य आदि मनोरंजन के साधन थे और कवियों का विशेष आदर था।

उपर्युक्त संक्षिप्त विवेचन से यह स्पष्ट हो जाता है कि इस काल में संगठित सामाजिक व्यवस्था की आशा नहीं कि जा सकती थी। धार्मिक अराजकता के बीच सामाजिक जीवन आडम्बरपूर्ण बनता जा रहा था। अधिकांश क्षत्रियों में राष्ट्रीय भावना का ह्रास हो गया था। समाज जाति-पाति, गोत्र आदि के झगडे में पड़कर ऐक्य की भावना भूल गया था। सामाजिक अवस्था का चित्र तत्कालीन हिंदी साहित्य में पूर्ण रुप से चित्रित हुआ है।

15

VIVEKANAND COLLEGE KOLHAPUR (Empowered Autonomous) ESTD JUNE 1964

Shri Swami Vivekanand Shikshan Sanstha's

VIVEKANAND COLLEGE, KOLHAPUR (EMPOWERED AUTONOMOUS)

2130, E Ward, Tarabai Park, Kolhapur, Maharashtra 416003

Student Marks Entry

Course:B.A.B.A. - TY SEM - V

Session:OCT - NOV 2024

Subject: HINDI-X (DSE - 1016E4) - CIE

Min/Max : 6/15

Sr.No.	PRN No	Seat No	Student Name	Marks	Sports Marks
1	2022014008	48231	Sanika anil bankar	14	0
2	2022014017	48238	Omkar Eknath Bhosale	15	0
3	2022014094	48276	shweta Sanjay kalugade	15	0
4	2022014267	48278	Ashwat Parappa Kamble	14	0
5	2022014107	48280	Pruthviraj Sachin Kamble	14	0
6	2022014120	48287	Prachi Tatyaso Karpe	15	0
7	2022014127	48291	Sanika Ramesh Khandekar	15	0
8	2022014161	48317	MITAKE VANDANA LAXMAN	15	0
9	2021014699	48320	MULLA AMAN MUBARAK	15	0
10	2022014170	48321	NADAF MOIZE AJAJ	15	0
11	2022014187	48329	Saifali Firoj Patel	15	0
12	2022014228	48347	SATPUTE PRANAV UMAJI	15	0
13	2022014235	48352	SHINDE OM LAXMAN	15	0
14	2022014246	48355	Anuradha prakash thakare	15	0
15	2022014266	48362	Rasika dattatray zugar	15	0
16	2020014609	48375	KAMBLE HARSHAD AAKARAM	14	0

VIVEKANAND COLLEGE KOLHAPUR (Empowered Autonomous) ESTD JUNE 1964

HEAD
DEPARTMENT OF HINDI
VIVEKANAND COLLEGE, KOLHAPUR
(EMPOWERED AUTONOMOUS)

Internal Examiner

Mobile Number

Scanned with OKEN Scanner

॥ ज्ञान, विज्ञान आणि सुसंस्कार यांसाठी शिक्षण प्रसार ॥
- शिक्षणमहर्षी डॉ. बापूजी साळुंखे

Shri Swami Vivekanand Shikshan Sanstha Kolhapur's 43331

VIVEKANAND COLLEGE, KOLHAPUR (AUTONOMOUS)

SUPPLIMENT

Signature of Supervisor

15/15

Suppliment No. : Vandana Laxman Mflake

Subject : Hindi x

Roll No. : 4864

Test / Tutorial No. : Turet

Class : BA-III

Div. :

* रेडियो में रोजगार के अवसरों पर प्रकाश डालिए।

इलेक्ट्रॉनिक जन संचार माध्यमों में रेडियो अत्यंत प्रभावशाली माध्यम है। रेडियो साक्षर तथा निरक्षर जनों को सूचना, ज्ञान और मनोरंजन के क्षेत्र में उपयोगी साबित हुआ है। इसके बारे में जवरीमल्ल पारिख लिखते है। रेडियो निरक्षरों के लिए भी एक वरदान है जिसके द्वारा वे सिर्फ सुनकर अधिक सूचना, ज्ञान और मनोरंजन हासिल कर लेते है। रेडियो और ट्रांजिस्टर की कीमत भी बहुत अधिक नहीं होती इस कारण वह सामान्य जनता के लिए भी कमोबेश सुलभ है। यही कारण है कि टी.वी. के व्यापक प्रसार के बावजूद तीसरी दुनिया के देशों में रेडियो का अपना महत्त्व आज भी कायम है।

तरंगों के द्वारा रेडियो के संदेश भेजे जाते है। यह संदेश दो प्रकार के होते है। पहला एम्प्लीट्यूड मॉड्यूलेशन (AM) और दूसरा फ्रीक्वेंसी मॉड्यूलेशन (FM) का मतलब फ्रीक्वेंसी ~~मे स्पष्ट~~ मॉड्यूलेशन। फ्रीक्वेंसी मॉड्यूलेशन के कारण रेडियो के विकास में नवक्रांति हुई। एफ.एम. के कारण एक ही फ्रीक्वेंसी में स्पष्ट और मधुर आवाज तथा नियंत्रित लय प्राप्त की जाती है। देश में सन 1993 ई. तक ऑल इंडिया रेडियो एक मात्र रेडियो प्रसारण था। इस के बाद सरकार ने रेडियो सेवा

क्षेत्र की नीजीकरण प्रक्रिया शुरू की। जल्द ही पूरे देश में करीब ८०० एफ.एम. रेडियो चैनेल्स सुनने को मिलेंगी।
एफ.एम. चैनेलों का बढ़ता प्रसार नव रोजगारों की नींव रखते हैं। एफ.एम. के कारण एक रेडियो में चैनेलों करीब ५००० रेडियो जॉकी (आर.जे.) की जरूरत है। इसके अलावा भाषा से संबंधित स्क्रिप्ट राइटर, निवेदक, उद्घोषक, समाचार संपादक, समाचार प्रपाठक, समाचार अनुवादक, क्रीड़ा समालोचक आदि कई प्रकार के रोजगार प्राप्त करने के अवसर मिलते हैं।

रेडियो जॉकी (आरजे) :

आजकल युवाओं में रेडियो जॉकी (आरजे) बनने की होड़ दिखाई देती है। वह अपनी मधुर आवाज और संभाषण कौशल से रेडियो के श्रोतागणों के दिलो-दिमाग में अपना स्थान प्राप्त करता है। साथ ही अपनी कार्य कुशलता से रेडियो समाज, मीडिया और वेब दुनिया में रुतबा अर्जित करता है। आरजे की असली पहचान मधुर आवाज, उच्चारण में स्पष्टता, भाषा पर प्रभुत्व, वाकपटुता और समय सूचकता के अनुसार प्रभावी स्क्रिप्ट राइटिंग आरजे की सफलता में चार चाँद लगाते हैं।

रेडियो जॉकी के गुण :

रेडियो जॉकी में निम्नांकित गुण होना अनिवार्य है।

1. भाषा पर प्रभुत्व :

रेडियो जॉकी के लिए भाषा पर प्रभुत्व होना निहायत जरूरी है। रेडियो श्राव्य माध्यम होने के कारण श्रोतागणों को भाषा द्वारा ही आकर्षित करना, उनमें जिज्ञासा का सृजन करना, भावनाओं का प्रवाह बनाए रखना और छोटे-छोटे सरल, सटीक और रोचक वाक्य रेडियो जॉकी को कामयाब बनाते हैं। भावशून्यता, फंबल, लिप साउंड जैसी गलतियों से बचना सफल रेडियो जॉकी की पहचान है। रेडियो जॉकी बहुभाषी हो तो उसका करियर [illegible] जाता है।

अच्छी आवाज : रेडियो में आवाज, उच्चारण और

VIVEKANAND COLLEGE KOLHAPUR (Empowered Autonomous) ESTD JUNE 1964

स्वच्छता एक ऐसा मानक है जिसपर आपको खरा उतरना ही होता है। रेडियो के लिए आवाज में कुछ गुणों का होना बहुत जरूरी है। इसके लिए चार चीजो पर ध्यान देना जरूरी है- क्या बोलना है, खुद विषय से जुडे, कैसे बोलेंगे यानी स्टाइल और कितना बोलेंगे इन पर ध्यान देना आवश्यक है। आपकी आवाज रेडियो प्रसारण के अनुरूप न हो पर अच्छी ट्रेनिंग लेकर आप उसे स्तर का बना सकते है।

3. उच्चारण और स्पष्टता :

कई बार बचपन से ही गलत तरीके से बोलते हैं तो वह आदत बन जाती है। कभी आप तुतलाते है और कभी बोलने मे अटकते हैं, फंबल करते है, शब्द रोल होते है, लिप साऊंड आता है आरजे अपनी बातचीत मे अन्य भाषा के तमाम शब्दो का इस्तेमाल करते है, जिसमे जाने अनजाने में ही सही वह शब्दो का गलत उच्चारण करता है, जो आरजे करियर के लिए खतरा बनता है।

4. मॉड्यूलेशन :

मॉड्यूलेशन हमारे ध्वनी उच्चारण की एक स्वाभाविक प्रक्रिया है, जिसमे हमारे बोलने का अंदाज शामिल होता है। आरजे को जो भी स्क्रिप्ट दी जाए, उसे उस मूड के हिसाब पढ़ना होता है। इससे श्रोता को अच्छा लगेगा और आपका संदेश भी पहुँचेगा।

5. संगीत का ज्ञान :

आरजे के लिए कम-से कम संगीत का प्राथमिक ज्ञान होना आवश्यक होता है। जैसे की नए-पुराने गीत, गायक, गीतकार तथा संगीतकारो के बारे मे भी पता होना चाहिए। जिससे वह गीत, संगीत, गीतकार पर अपनी बात रख सके।

एक सफल आरजे बनने के लिए उपर्युक्त गुणों को आत्मसात करना अनिवार्य होता है।

15

VIVEKANAND COLLEGE KOLHAPUR (Empowered Autonomous) ESTD JUNE 1964

Shri Swami Vivekanand Shikshan Sanstha's

VIVEKANAND COLLEGE, KOLHAPUR (EMPOWERED AUTONOMOUS)

2130, E Ward, Tarabai Park, Kolhapur, Maharashtra 416003

Student Marks Entry

Course: B.A.B.A. - TY SEM - V **Session:** OCT - NOV 2024

Subject: HINDI-XI (DSE - 1016E5) - CIE

Min/Max : 6/15

Sr.No.	PRN No	Seat No	Student Name	Marks	Sports Marks
1	2022014008	48231	Sanika anil bankar	14	0
2	2022014017	48238	Omkar Eknath Bhosale	15	0
3	2022014094	48276	shweta Sanjay kalugade	15	0
4	2022014267	48278	Ashwat Parappa Kamble	14	0
5	2022014107	48280	Pruthviraj Sachin Kamble	14	0
6	2022014120	48287	Prachi Tatyaso Karpe	15	0
7	2022014127	48291	Sanika Ramesh Khandekar	15	0
8	2022014161	48317	MITAKE VANDANA LAXMAN	15	0
9	2021014699	48320	MULLA AMAN MUBARAK	15	0
10	2022014170	48321	NADAF MOIZE AJAJ	15	0
11	2022014187	48329	Saifali Firoj Patel	15	0
12	2022014228	48347	SATPUTE PRANAV UMAJI	15	0
13	2022014235	48352	SHINDE OM LAXMAN	15	0
14	2022014246	48355	Anuradha prakash thakare	15	0
15	2022014266	48362	Rasika dattatray zugar	15	0
16	2020014609	48375	KAMBLE HARSHAD AAKARAM	14	0

VIVEKANAND COLLEGE KOLHAPUR ESTD JUNE 1964 (Empowered Autonomous)

HEAD
DEPARTMENT OF HINDI
VIVEKANAND COLLEGE, KOLHAPUR
(EMPOWERED AUTONOMOUS)

Scanned with OKEN Scanner

॥ ज्ञान, विज्ञान आणि सुसंस्कार यांसाठी शिक्षण प्रसार ॥
– शिक्षणमहर्षी डॉ. बापूजी साळुंखे

Shri Swami Vivekanand Shikshan Sanstha Kolhapur's

43332

VIVEKANAND COLLEGE, KOLHAPUR (AUTONOMOUS)

SUPPLIMENT

Signature of Supervisor: 15/15 Tuped

Suppliment No. : Vandana Laxman Mhadke

Subject : Hindi XI

Roll No. : 4864

Test / Tutorial No. :

Class : BA-III

Div. :

* दैवी उत्पत्ति सिद्धांत की जानकारी दिजिए।

इस सिद्धांत को दिव्य उत्पत्तिवाद या दिव्य सिद्धान्त भी कहते है। भाषाओं की उत्पत्ति के संबंध में यह सबसे प्राचीन मत है। इस मत के अनुसार भाषा की उत्पत्ति ईश्वर के ~~मनुष्य~~ के द्वारा हुई है। जैसे ईश्वर ने मनुष्य को बनाया, वैसे ही उसने उसे भाषा दी। मतलब भगवान ने ही भाषा को बनाया। मनुष्य जब उत्पन्न हुआ तो अपनी संपूर्ण विशेषताओं के साथ इस पृथ्वी पर आया था। जैसे अपने आप मनुष्य में चेतना का विकास हुआ, वैसे ही उसे ~~भी~~ अपने आप भाषा भी प्राप्त हो गई। अतः इस सिद्धांत के अनुसार भाषा का (निर्माता) ईश्वर है। इस सिद्धांत की पुष्टी के लिए धार्मिक ग्रंथो का उल्लेख किया जाता है।

भारतीय पंडित वेदों को अपौरुषेय मानते है। उनका ~~दृढ~~ दृढ विश्वास रहा है कि संस्कृत को ईश्वर ने बनाया। और फिर उसी भाषा में वेदों की रचना की। संस्कृत को देवभाषा कहने में भी उनके इसी विश्वास की ओर संकेत है। संस्कृत भाषा तथा उसके व्याकरण के आधार पाणिनि के 14 सूत्र शिव के डमरू से निकले माने जाते है। ईश्वर निर्मित होने के कारण ही इसे ... पंडित संसार की सभी भाषाओं का मूल मा[नते] है।

अर्थात भारतीय हिंदू विद्वान वेदों को अपौरुषेय यानि अलौकिक मानते है। उनके अनुसार ईश्वर ने संस्कृत की रचना की और फिर उसी भाषा में वेदों का निर्माण किया गया।

बौद्ध मतावलंबी 'पालि' को भी इसी प्रकार मूल भाषा मानते रहे हैं, और उनका विश्वास रहा है कि 'पालि' भाषा अनादि काल से चली आ रही मूलभाषा है।

'जैन' लोग तो संस्कृत पंडितों और बौद्धों से भी चार कदम आगे है, उनके अनुसार तो अर्धमागधी केवल मनुष्यों की ही नहीं; पशु पक्षियों की भी भाषा है था।

ईसाई लोग और उनमें भी प्रमुखतः कैथोलिक लोग 'हिब्रू' को (जिसमें उनका धर्म ग्रंथ old Testament लिखा गया है) संसार की सभी भाषाओं की जननी मानते हैं। उनके अनुसार हिब्रू आदम और हव्वा को पूर्ण विकसित भाषा के रूप में भगवान द्वारा दी गई थी। फिर बाबुल की मीनारवाली घटना के कारण उसी के अनेक रूप हो गए और इस प्रकार संसार में अनेक भाषाएँ बन गईं। इसके आधार पर 'हिब्रू' के विद्वानों ने संसार की अनेक भाषाओं से उन शब्दों को इकट्ठा किया था, जो हिब्रू शब्दों से मिलते जुलते थे, और उनसे यह करने का प्रयास किया कि यथार्थतः हिब्रू सभी भाषाओं की जननी है। मुसलमान लोग कुरान को खुदा का कलाम मानते हैं। फारसी धर्मवालों ने अवेस्ता भाषा को ईश्वर निर्मित होने का स्वीकार किया। मिस्र देश के प्राचीन लोगों का अपनी भाषा के संबंध में कुछ ऐसा ही विश्वास था।

प्लेटो ने सभी चीजों के नामों को प्राकृतिक या प्रकृति प्रदत्त कहा था। यह मत भी दैवी उत्पत्ति का ही एक रूप है। इसी मत के प्रभाव से लोगों का यह भी मत रहा कि मनुष्य जन्म से ही एक भाषा सीखकर आता है और वही भाषा ईश्वर की तथा सब से प्राचीन भाषा है। इस बात की परीक्षा करने के लिए

के राजा सैमेटिक्स (Psammitichos) ने दो बच्चों को जन्म के बाद ही अलग रखा था। उनके पास जानेवालों को कुछ बोलने का निषेध था। बड़े होने पर उनके मुँह से केवल बेकोस (bekos) शब्द ही सुना गया। बेकोस फ्रीजीयन भाषा का शब्द है और इसका अर्थ रोटी होता है। रोटी देनेवाले फ्रीजियन नौकर ने गलती से कभी इस शब्द का उच्चारण उनके सामने कर दिया था। और बच्चों ने इस शब्द का अनुकरण कर लिया।

अकबर बादशाह (1556-1605) ने भी इस प्रकार का प्रयोग किया था। 'अकबर-बादशाह' का प्रयोग सबसे सफल था और फल यह हुआ कि प्रयोग के लड़के गूँगे निकले। इस प्रकार कहना न होगा की बच्चा माँ के पेट से कोई भाषा सीखकर नहीं आता। अर्थात ईश्वर प्रदत्त कोई भाषा नहीं है ऐसा मानना अंधविश्वास मात्र है। आज इस मत को कोई नहीं मानता।

15

VIVEKANAND COLLEGE KOLHAPUR (Empowered Autonomous) ESTD JUNE 1964

Scanned with OKEN Scanner